**GENERAL STUDIES (सामान्य अध्ययन)**

**Paper IV (पेपर IV)**

**Section A (अनुभाग A)**

**Q 1. (a) What are the skills required for being emotionally intelligent? Discuss the role of emotional intelligence in administration and governance. (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:** Emotional intelligence-concepts, and their utilities and application in administration and governance.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, define emotional intelligence.**
* **In Body,**
* **Discuss the skills that are required for being emotionally intelligent.**
* **Explain the role of emotional intelligent in administration and governance.**
* **Conclude, by re-ascertaining the significance of emotional intelligence.**

**Answer:**

Emotional Intelligence (EI) is the capability of a person to assess, manage and control one’s own emotions as well as the emotions of others. It is critical to manage our behaviour and decision making. It is a scientific fact that emotions precede thought. When emotions run high, they change the way our brain’s function, diminishing our cognitive abilities, decision-making powers, and even interpersonal skills. Understanding and managing our emotions and the emotions of others helps us to be more successful in both our personal and professional lives.

**The following skills are required for being emotionally intelligent:**

* **Social Skills**: Emotionally intelligent people communicate and relate well with others. They listen intently and adapt their communications to others’ unique needs, including diverse backgrounds. They show compassion.
* **Optimism:** Emotionally intelligent people have a positive and optimistic outlook on life. Their mental attitude energizes them to work steadily towards goals despite setbacks.
* **Emotional Control**: Emotionally intelligent people handle stress evenly. They deal calmly with emotionally stressful situations, such as change and interpersonal conflicts.
* **Flexibility**: Emotionally intelligent people adapt to changes. They use problem-solving to develop options.
* **Self-awareness:** Self-awareness is crucial for being emotionally intelligent. Emotionally intelligent people are aware of how they feel, what motivates and demotivates them, and how they affect others.

**Emotional intelligence plays a crucial role in administration and governance:**

Civil servants are the trustees of public interest and are entrusted to formulate and implement policies. Therefore, they need to be high on emotional intelligence, because without EI it would be difficult to be empathetic to different sections of the society, to be firm in their approach, and to be good change agents.

* **Inspire a Shared Vision:** Inspiring a shared vision requires a good level of empathy and optimism. It gives our vision a positive and desirable flavour so that others want to share in it. Our empathy ensures that we hit the right chord in terms of what others want to see and hear from us.
* **Challenge the Process:** An emotionally intelligent leader strives for change. He looks for opportunities to improve and grow and also to experiment and take risks. One of the key emotional intelligence skills that are needed in order to challenge the status quo is flexibility. Flexible people are more likely to try new things, take risks, and face new challenges without fear.
* **Enable Others to Act:** Administrators can empower others in a variety of ways. They enable others by fostering collaboration and building trust. Administrators share power, delegate well, and do what’s necessary to help others perform. In terms of emotional intelligence, there is a need of self-regard and interpersonal skills to enable others to act.
* **Encourage Others:** Administrators having emotional intelligence easily recognize the contributions of others and also gives rewards for their work. This encourages others in the administration for doing good work.
* **High Self-regard:** A good administrator have high self-regard which is a prerequisite for effective administration or leadership.

The administrator and policy makers need to be aware about the emotions of masses, their attachments with cultures prevalent which are largely emotional which can be cultured only through applying rationale views learnt through own emotions. The EQ can be applied to take future policy decisions keeping in mind the consequences aftermath. As the individual whether he is administrator or policy maker ultimately is a product of society and an optimal application of own emotions can only output the desired goals.

As David Goleman rightly said, Emotional intelligence is a person’s ability to manage his feelings so that those feelings are expressed appropriately and effectively. This clearly means that emotional intelligence Is the largest single predictor of success.

1. **(a) भावनात्मक रूप से बुद्धिमान (Emotionally intelligent) होने के लिए आवश्यक कौशल क्या हैं? प्रशासन और शासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका पर चर्चा कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता-अवधारणाएं, और प्रशासन और शासन में उनकी उपयोगिता और अनुप्रयोग।

**प्रश्न को डिकोड करना:**

**• परिचय में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता को परिभाषित कीजिये।**

**• मुख्य भाग में,**

**o भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होने के लिए आवश्यक कौशलों की चर्चा कीजिये।**

**o प्रशासन और शासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका की व्याख्या कीजिये।**

**• संवेगात्मक बुद्धि के महत्व की पुनर्जांच करके निष्कर्ष निकालिए।**

**उत्तर:**

भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक व्यक्ति की अपनी भावनाओं के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं का आकलन, प्रबंधन और नियंत्रण करने की क्षमता होती है। हमारे व्यवहार और निर्णय निर्माण का प्रबंधन अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि विचार से पहले भावनाएं आती हैं। जब भावनाएं तीव्र होती हैं, तो वे हमारे मस्तिष्क के कार्य करने के तरीके को बदल देती हैं, हमारी संज्ञानात्मक क्षमताओं, निर्णय लेने की शक्तियों और यहां तक कि अंतर्वैयक्तिक कौशल को भी कम कर देती हैं। अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझना और प्रबंधित करना हमें अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में अधिक सफल होने में मदद करता है।

भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होने के लिए निम्नलिखित कौशल आवश्यक हैं:

**• सामाजिक कौशल** (**Social Skills**): भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग संवाद करते हैं और दूसरों के साथ सुसंबंध स्थापित करते हैं। वे ध्यान से सुनते हैं और विविध पृष्ठभूमि सहित दूसरों की अनूठी जरूरतों के लिए अपने संवाद को अनुकूलित करते हैं। वे करुणा दिखाते हैं।

**• आशावाद** (**Optimism**): भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोगों का जीवन के प्रति सकारात्मक और आशावादी दृष्टिकोण होता है। उनका मानसिक रवैया उन्हें असफलताओं के बावजूद लक्ष्य की ओर

काम करने के लिए निरंतर उत्साहित करता है।

**• भावनात्मक नियंत्रण** (**Emotional Control**): भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग तनाव का समान रूप से सामना करते हैं। वे भावनात्मक रूप से तनावपूर्ण स्थितियों, जैसे परिवर्तन और अंतर्वैयक्तिक संघर्षों से शांतिपूर्वक निपटते हैं।

**• लचीलापन** (**Flexibility**): भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग परिवर्तनों को स्वीकार करते हैं। वे विकल्प विकसित करने के लिए समस्या-समाधान का उपयोग करते हैं।

**• आत्म-जागरूकता** (**Self-awareness**): भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होने के लिए आत्म-जागरूकता महत्वपूर्ण है। भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग इस बात से अवगत होते हैं कि वे कैसा महसूस करते हैं, उन्हें क्या प्रेरित करता है और उन्हें प्रभावित करता है, और वे दूसरों को कैसे प्रभावित करते हैं।

**भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) प्रशासन और शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है:**

सिविल सेवक जनहित के संरक्षक (ट्रस्टी) होते हैं और उन्हें नीतियां बनाने और लागू करने का काम सौंपा जाता है। इसलिए, उन्हें उच्च स्तर पर भावनात्मक रूप से बुद्धिमत्तापूर्ण होने की आवश्यकता है, क्योंकि भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बिना सिविल सेवक का, समाज के विभिन्न वर्गों के प्रति सहानुभूति रखना, अपने दृष्टिकोण में अविचल होना और अच्छा परिवर्तक एजेंट बनना मुश्किल होगा।

• **एक साझा दृष्टिकोण प्रेरित करना:** एक साझा दृष्टिकोण को प्रेरित करने के लिए एक अच्छे स्तर की सहानुभूति और आशावाद की आवश्यकता होती है। यह हमारी दृष्टिकोण को एक सकारात्मक और वांछनीय गुण देता है ताकि दूसरे भी इसे साझा करना चाहें। हमारी सहानुभूति इस संदर्भ में सही तालमेल सुनिश्चित करती है कि दूसरे लोग हममें क्या देखना और हमसे क्या सुनना चाहते हैं।

• **प्रक्रिया को चुनौती देना:** भावनात्मक रूप से बुद्धिमान एक नेता परिवर्तन के लिए प्रयास करता है। वह सुधार करने एवं विकास व प्रयोग करने और जोखिम लेने के अवसरों की तलाश करता है। यथास्थिति को चुनौती देने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रमुख आवश्यक कौशलों में से एक लचीलापन है। लोचशील लोग नई चीजों को आजमाने, जोखिम लेने और बिना किसी डर के नई चुनौतियों का सामना करने की अधिक संभावना रखते हैं।

• **दूसरों को कार्य करने में सक्षम बनाना:** प्रशासक विभिन्न तरीकों से दूसरों को सशक्त बना सकते हैं। वे सहयोग को बढ़ावा देकर और विश्वास का निर्माण करके दूसरों को सक्षम बनाते हैं। प्रशासक, शक्ति और कार्यभार साझा करते हैं और वे सभी आवश्यक कार्य करते हैं जो दूसरों को अच्छा प्रदर्शन करने में मदद करने के लिए आवश्यक हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संदर्भ में, दूसरों को कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए आत्म-सम्मान और अंतर्वैयक्तिक कौशल की आवश्यकता होती है।

• **दूसरों को प्रोत्साहित करना:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले प्रशासक आसानी से दूसरों के योगदान को पहचानते हैं और उनके काम के लिए उन्हें प्रतिफल भी प्रदान करते हैं। ये प्रशासन में दूसरों को अच्छा काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

• **उच्च स्वाभिमान:** एक अच्छे प्रशासक में उच्च स्वाभिमान होता है जो प्रभावी प्रशासन या नेतृत्व के लिए एक पूर्वापेक्षा है।

प्रशासक और नीति निर्माताओं को जनता की भावनाओं, प्रचलित संस्कृतियों के साथ उनके जुड़ाव के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता होती है जो कि काफी हद तक भावनात्मक होते हैं जिन्हें केवल अपनी भावनाओं के माध्यम से सीखे गए तर्कसंगत विचारों को लागू करके ही सुसंस्कृत किया जा सकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता को भविष्योन्मुखी परिणामों को ध्यान में रखते हुए आगामी नीतिगत निर्णय लेने के लिए लागू किया जा सकता है। व्यक्ति के रूप में चाहे वह प्रशासक हो या नीति निर्माता अंततः समाज का एक उत्पाद है और केवल अपनी भावनाओं के एक इष्टतम अनुप्रयोग से ही वांछित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है।

जैसा कि डेविड गोलमैन ने ठीक ही कहा है, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक व्यक्ति की अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने की क्षमता होती है ताकि उन भावनाओं को उचित और प्रभावी ढंग से व्यक्त किया जा सके। इसका स्पष्ट अर्थ है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता सफलता का सबसे बड़ा एकल पूर्व सूचक है।

1. **(b) How does the use of social media influence political participation and civic engagement? Discuss with examples. (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:** Philosophical basis of governance and probity; Information sharing and transparency in government.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, explain in brief about social media.**
* **In Body,**
* **Discuss how social media influence political participation.**
* **Discuss using social media to increase civic engagement:**
* **Conclude, with an opinion.**

**Answer:**

Social media can be defined in general terms as a web-based communication tools that enable people to interact with each other by both sharing and consuming information. Social media platforms, such as Twitter, Facebook and YouTube provide new ways to stimulate citizen engagement in political life, where elections and electoral campaigns have a central role.

**Influencing Political Participation:**

* Various social media platforms such as Facebook, Twitter, Instagram, Google plus etc. were used for various objectives in electoral process like general awareness, propaganda by respective parties, track general trends of people’s mindset etc.
* Election Commission also have used such platforms to increase the awareness about some basic issues and information concerning to a voter such as, procedure of voting, important documents required at the time of voting, geographical location of election booth etc.
* In 16th general election in India social media played a vital role. Politicians have taken part in Google+ Hangouts, televised interviews organized by Facebook and using smart phone messaging app What’s App to connect with millions of tech-savvy urban voters.
* Companies like Facebook, Twitter, and Google etc. had started several features in their own website’s homepage, specifically made for the purpose of General Election-2014, for example, Tech giant Google has revamped its election hub to include features like Pledge to Vote campaign, a ‘Google score’ tool for politicians, search trends info graphics, YouTube election playlists and Hangout details for users.

**Using Social Media to increase Civic Engagement:**

Citizen participation and civic engagement are the building blocks for good governance and social media play important role in this such as:

* Social media platform can act as a vital tool for ensuring accountability by not only airing the grievances of the general public but also disseminating information regarding government programmes and activities.
* It could act as a bidirectional feedback providing mechanism highlighting the achievements and pointing to shortcomings in real-time.
* Example being help provided during Chennai floods and active usage of Twitter by the railway ministry.
* In India, Prime Minister Office has used social media as a potent tool to engage people in the governance process by asking for their suggestions, providing information for several government welfare programmes and policies etc.
* Social media platform is acting as a vital tool for increasing transparency in government functioning and holding the mighty state responsible for its acts not only in urban areas but in any part of the nation.
* Disaster management through social media has been proved a better tool to involve active participation of communities during crisis.

While social media empowers citizens by giving them a voice, it is also an unregulated medium where false and defamatory views are sometimes expressed, which may create law and order problem in the society. Further, its misuse has led to tension in communally sensitive places as has been seen in the case of India. In a nutshell, social media can be used by Government agencies as a mechanism to solicit response on policy planning, flaws/drawbacks in implementation thereby helping the agencies becoming more citizen-friendly.

**1 (b) सोशल मीडिया का उपयोग राजनीतिक भागीदारी और नागरिक जुड़ाव को कैसे प्रभावित करता है? सोदाहरण चर्चा कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:**शासन और ईमानदारी का दार्शनिक आधार; सरकार में सूचना साझा करना और पारदर्शिता।

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में सोशल मीडिया के बारे में संक्षेप में बताइए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **चर्चा कीजिए कि सोशल मीडिया राजनीतिक भागीदारी को कैसे प्रभावित करता है।**
* **नागरिक जुड़ाव बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया के उपयोग पर चर्चा कीजिए:**
* **एक राय के साथ निष्कर्ष निकालिए।**

**उत्तर:**

सोशल मीडिया को सामान्य शब्दों में एक वेब-आधारित संचार उपकरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो लोगों को जानकारी साझा करने और उपभोग करने, दोनों के द्वारा एक दूसरे के साथ संचार स्थापित करने में सक्षम बनाता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जैसे कि ट्विटर, फेसबुक और यूट्यूब राजनीतिक जीवन में नागरिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करने के नए तरीके प्रदान करते हैं, जहां चुनाव और चुनावी अभियानों की केंद्रीय भूमिका होती है।

**राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करना:**

* विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, गूगल प्लस आदि का उपयोग चुनावी प्रक्रिया में विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया गया था जैसे कि सामान्य जागरूकता, संबंधित दलों द्वारा प्रचार, लोगों की मानसिकता के सामान्य रुझानों को ट्रैक करना आदि।
* चुनाव आयोग ने कुछ बुनियादी मुद्दों और मतदाता से संबंधित जानकारी जैसे मतदान की प्रक्रिया, मतदान के समय आवश्यक महत्वपूर्ण दस्तावेज, चुनाव बूथ की भौगोलिक स्थिति आदि के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए भी ऐसे प्लेटफार्मों का उपयोग किया है।
* भारत में 16वें आम चुनाव में सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजनेताओं ने Google+ हैंगआउट, फेसबुक द्वारा आयोजित टेलीविज़न साक्षात्कार और लाखों तकनीकी जानकारों ने शहरी मतदाताओं से जुड़ने के लिए स्मार्ट फोन मैसेजिंग ऐप व्हाट्स ऐप का उपयोग करके भाग लिया है।
* फेसबुक, ट्विटर और गूगल आदि जैसी कंपनियों ने अपनी वेबसाइट के होमपेज में कई विशेषताएं शुरू की थीं, विशेष रूप से जो आम चुनाव-2014 के उद्देश्य से बनाई गई विशेषताएं, उदाहरण के लिए तकनीकी दिग्गज गूगल ने ‘वोट के लिए संकल्प’ (Pledge to Vote) अभियान, राजनेताओं के लिए 'गूगल स्कोर' टूल, सर्च ट्रेंड इंफो ग्राफिक्स, यूट्यूब चुनावी प्लेलिस्ट और उपयोगकर्ताओं के लिए हैंगआउट डिटेल जैसी सुविधाओं को शामिल करने के लिए अपने चुनाव केंद्र (election hub) को नया रूप दिया है। ।

**नागरिक जुड़ाव बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करना:**

नागरिक भागीदारी और नागरिक जुड़ाव सुशासन निर्माण आधार हैं और सोशल मीडिया इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जैसे:

* सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म न केवल आम जनता की शिकायतों को बल्कि सरकारी कार्यक्रमों और गतिविधियों के बारे में जानकारी को भी प्रसारित करके जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य कर सकता है।
* यह एक द्विदिश प्रतिक्रिया के रूप में कार्य कर सकता है जो उपलब्धियों को उजागर करने और वास्तविक समय में कमियों को इंगित करने वाला तंत्र प्रदान करता है।
* उदाहरण चेन्नई बाढ़ के दौरान प्रदान की गई सहायता और रेल मंत्रालय द्वारा ट्विटर का सक्रिय उपयोग।
* भारत में, प्रधान मंत्री कार्यालय ने सोशल मीडिया का उपयोग लोगों को शासन प्रक्रिया में शामिल करने के लिए, उनके सुझाव मांगकर, कई सरकारी कल्याण कार्यक्रमों और नीतियों आदि के लिए जानकारी प्रदान करके एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में किया है।
* सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म सरकारी कामकाज में पारदर्शिता बढ़ाने और शक्तिशाली राज्य को न केवल शहरी क्षेत्रों में बल्कि देश के किसी भी हिस्से में अपने कृत्यों के लिए जिम्मेदार ठहराने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य कर रहा है।
* संकट के दौरान समुदायों की सक्रिय भागीदारी को शामिल करने के लिए सोशल मीडिया के माध्यम से आपदा प्रबंधन एक बेहतर साधन साबित हुआ है।

जबकि सोशल मीडिया नागरिकों को आवाज उठाने का माध्यम प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाता है, यह एक अनियंत्रित माध्यम भी है जहां कभी-कभी झूठे और अपमानजनक विचार व्यक्त किए जाते हैं, जो समाज में कानून व्यवस्था की समस्या पैदा कर सकते हैं। इसके अलावा, इसके दुरुपयोग ने सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील स्थानों में तनाव पैदा कर दिया है जैसा कि भारत के मामले में देखा गया है। संक्षेप में, सोशल मीडिया का उपयोग सरकारी एजेंसियों द्वारा नीति नियोजन, कार्यान्वयन में खामियों/कमियों पर प्रतिक्रिया मांगने के लिए एक तंत्र के रूप में किया जा सकता है जिससे एजेंसियों को अधिक नागरिक अनुकूल बनने में मदद मिलती है।

**Q 2. (a) There can be honesty without integrity, but no integrity without honesty. Do you agree? Justify your stand with examples. (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:**

Attitude: content, structure, function; its influence and relation with thought and behaviour; moral and political attitudes; social influence and persuasion.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, define honesty and integrity.**
* **In Body,**
* **Mention the traits of an honest person.**
* **Discuss how integrity cannot exist without honesty**
* **Conclude, with an opinion.**

**Answer:**

Honesty and Integrity are often considered to be synonymous, but they differ in their meanings. Honesty is a facet of moral character that connotes positive and virtuous attributes such as integrity, truthfulness, straightforwardness, including straightforwardness of conduct, along with the absence of cheating, lying, etc. Integrity is the quality of being honest and having strong moral principles. Integrity offers a more holistic approach, which is living by strict ethical principles and conduct.

**Traits of an honest person:**

* Open and just in dealing with others.
* Straightforwardness of conduct, along with the absence of lying, cheating, theft, etc.
* Trustworthy, loyal, fair and sincere. However, Integrity means adherence to principles.

**However, integrity means adherence to principles. It is a three-step process:**

* Choosing the right course of conduct.
* Acting consistently with the choice—even when it is inconvenient or unprofitable to do.
* Openly declaring where one stands.

Accordingly, integrity is equated with moral reflection, steadfastness to commitments, trustworthiness. Here it is similar to its approach to ‘honesty’. The major difference between honesty and integrity is that one may be entirely honest without engaging in the thought and reflection that integrity demands. For instance, a person may be honest and loyal to his superior but helps him indulge in malicious activities. Here, the sincerity of the person has personal benefits. He has compromised the dignity of the office and therefore lacks integrity. Honesty can exist without Integrity because Integrity means consistently behaving in an open, fair, and transparent manner; honouring one’s commitments; and works to uphold the Public Service Values.

**Integrity cannot exist without honesty because integrity involves:**

* Provides honest and frank opinion to uphold public interest.
* Trustworthy in all circumstances.
* Full disclosure, by sharing the political implications of the decisions being made.
* Creates a culture that encourages open, honest and ethical behaviour.
* Treats people impartially, regardless of political, social, demographic, geographic, circumstances or bias.

In any circumstances, a person with integrity always upholds the value of honesty automatically.

1. **(a) सत्यनिष्ठा (integrity) के बिना ईमानदारी (honesty) हो सकती है, लेकिन ईमानदारी के बिना सत्यनिष्ठा नहीं हो सकती। क्या आप सहमत हैं? अपने मत की सोदाहरण पुष्टि कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:**

**अभिवृति (Attitude): अंतर्वस्तु, संरचना, प्रकार्य; विचार और व्यवहार के साथ इसका प्रभाव और संबंध; नैतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण; सामाजिक प्रभाव और अनुनय।**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

• परिचय में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को परिभाषित कीजिये ।

• मुख्य भाग में,

० एक ईमानदार व्यक्ति के अभिलक्षणों का उल्लेख कीजिये।

० चर्चा कीजिये  कि ईमानदारी के बिना अखंडता कैसे मौजूद नहीं हो सकती

• एक राय के साथ निष्कर्ष निकालिए।

**उत्तर:**

ईमानदारी (Honesty) और सत्यनिष्ठा (Integrity) को अक्सर पर्यायवाची माना जाता है, लेकिन वे अपने अर्थों में भिन्न होते हैं। ईमानदारी नैतिक चरित्र का एक पहलू है जो धोखाधड़ी, झूठ बोलना आदि की अनुपस्थिति के साथ आचरण की सरलता, ईमानदारी, सच्चाई, सीधेपन, सकारात्मक और सद्गुणों को दर्शाता है। सत्यनिष्ठा ईमानदार होने और मजबूत नैतिक सिद्धांतों का गुण है। सत्यनिष्ठा एक अधिक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो सख्त नैतिक सिद्धांतों और आचरण में निहित होता है।

**एक ईमानदार व्यक्ति के अभिलक्षण:**

• दूसरों के साथ खुला और न्यायपूर्ण व्यवहार करना।

• आचरण की सरलता के साथ-साथ झूठ, छल, चोरी आदि का अभाव।

• भरोसेमंद, वफादार, निष्पक्ष और सच्चा। हालांकि, सत्यनिष्ठा से आशय सिद्धांतों के पालन करने से है।

**तथापि, सत्यनिष्ठा से आशय सिद्धांतों के पालन करने से है।यह तीन चरणों वाली प्रक्रिया है:**

• आचरण का सही तरीका चुनना।

• निरंतर इस तरीके के अनुसार कार्य करना—तब भी जब ऐसा करना असुविधाजनक या लाभहीन हो।

• अपने इस आचरण को खुले तौर पर स्वीकार करना।

तदनुसार, सत्यनिष्ठा नैतिक विचार, प्रतिबद्धताओं के प्रति दृढ़ता एवं विश्वसनीयता के समान है। यहाँ यह 'ईमानदारी' के अपने दृष्टिकोण के समान है। ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के बीच मुख्य अंतर यह है कि कोई व्यक्ति सत्यनिष्ठा के लिए आवश्यक सोच और विचार के बिना पूरी तरह से ईमानदार हो सकता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति अपने वरिष्ठ के प्रति ईमानदार और वफादार हो सकता है लेकिन उसे दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों में लिप्त होने में मदद करता है। यहां, व्यक्ति की ईमानदार और वफादारी के व्यक्तिगत लाभ हैं। यहां उसने पद की गरिमा से समझौता किया है और इसलिए उसमें सत्यनिष्ठा का अभाव है। ईमानदारी सत्यनिष्ठा के बिना मौजूद हो सकती है क्योंकि सत्यनिष्ठा का अर्थ है निरंतर खुले, निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से व्यवहार करना; किसी के प्रति प्रतिबद्धताओं का सम्मान करना; और लोक सेवा मूल्यों को बनाए रखने के लिए काम करना।

**सत्यनिष्ठा, ईमानदारी के बिना मौजूद नहीं हो सकती क्योंकि सत्यनिष्ठा में निम्न शामिल हैं:**

• जनहित को बनाए रखने के लिए ईमानदार और स्पष्ट राय प्रदान करता है।

• सभी परिस्थितियों में भरोसेमंद।

• पूर्ण प्रकटीकरण, लिए जा रहे निर्णयों के राजनीतिक निहितार्थों को साझा करके।

• एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करता है जो खुले, ईमानदार और नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित करती है।

• राजनीतिक, सामाजिक, जनसांख्यिकीय, भौगोलिक परिस्थितियों या पूर्वाग्रहों की परवाह किए बिना लोगों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करता है।

 सत्यनिष्ठ व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में, हमेशा ईमानदारी के मूल्य को स्वचालित रूप से बनाए रखता है।

**2 (b) Discuss the concept of integrity and how it is neither a single character trait nor limited to a particular role. (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:**

Attitude: content, structure, function; its influence and relation with thought and behaviour; moral and political attitudes; social influence and persuasion.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, define integrity.**
* **In Body, discuss how integrity is neither a single character trait nor limited to a particular role.**
* **Conclude, with an opinion.**

**Answer:**

Integrity is the quality of having strong ethical principles that are followed at all times. Honesty and trust are central to integrity, as is consistency. Integrity compels us to be socially conscious and to welcome both personal and professional responsibility. Integrity requires self-discipline and will power capable of resisting temptation. Its priceless reward is peace of mind and true dignity. There’s one proviso, no one can guarantee that his or her particular version of integrity is actually sound and true, and not misguided.

* Integrity develops when one cultivates a pattern of consistently acting in ways that combine sound reasons with affective confidence.
* A person with integrity can intentionally and systematically assess decision alternatives in terms of the soundness of his reasons for selecting each one and the quality of the feelings he can expect about choosing it. Consequently, he may also be able to identify the sources of those positive or negative feelings.
* On the other hand, those whose actions are in conflict with what they believe are lacking in integrity. They cannot be trusted because their inner controls are so weak that their behavior is unpredictable and inconsistent.
* Maintaining a high degree of subjective responsibility is important not only for the sake of our sense of wholeness, self-esteem and identity – essential as these are to mental health – but also for the fulfilment of our objective responsibility.
* It has been suggested that integrity involves wholeness, not only within us, but also in our relationships.
* Moreover, integrity is neither a single character trait nor limited to roles, but rather “a sophisticated state of processing experience in the world that encompasses moral judgment, creativity, and intuitive capability, as well as rational analytic powers”.
* Integrity can be understood as:
* Integrity as the integration of self.
* Integrity as maintenance of identity.
* Integrity as standing for something.
* Integrity as moral purpose; and
* Integrity as a virtue.

Thus, integrity is neither a single character trait, nor limited to a particular role. Administrators who have integrity invite trust from others because they are consistent in word and deed. And it is this trust that integrates an organization.

1. **(b) सत्यनिष्ठा (integrity) की अवधारणा पर चर्चा कीजिए और यह कैसे न तो एक एकल चरित्र विशेषता है न ही किसी विशेष भूमिका तक सीमित है। (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:**

**अभिवृत्ति: सामग्री, संरचना, कार्य, इसका विचार और व्यवहार के साथ संबंध एवं प्रभाव; नैतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण; सामाजिक प्रभाव और अनुनय।**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* + परिचय में, सत्यनिष्ठा को परिभाषित कीजिये।
  + मुख्य भाग में चर्चा कीजिये कि कैसे सत्यनिष्ठा न तो एक एकल चरित्र विशेषता है और न ही किसी विशेष भूमिका तक सीमित है।
  + एक राय के साथ निष्कर्ष दीजिये।

**उत्तर:**

सत्यनिष्ठा (**integrity**) एक ऐसा मजबूत नैतिक सिद्धांत होने का गुण है जिसका हर समय पालन किया जाता है। निरंतरता की तरह, ईमानदारी और विश्वास भी सत्यनिष्ठा के लिए सबसे अहम होते हैं। सत्यनिष्ठा हमें सामाजिक रूप से जागरूक होने और व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों जिम्मेदारियों का स्वागत करने के लिए विवश करती है। सत्यनिष्ठा के लिए आत्म-अनुशासन और प्रलोभन का विरोध करने में सक्षम इच्छा-शक्ति की आवश्यकता होती है। मन की शांति और सच्ची गरिमा इसका अनमोल इनाम है। इसमें एक परंतुक (proviso) है कि कोई भी व्यक्ति गारंटी नहीं दे सकता है कि उसकी सत्यनिष्ठा वास्तव में सही और सच्ची है, और गुमराह नहीं है।

* सत्यनिष्ठा का विकास तब होता है जब व्यक्ति लगातार ऐसे तरीकों से कार्य करने के पैटर्न विकसित करता है जिसमें अच्छे कारणों को भावनात्मक आत्मविश्वास के साथ जोड़ा जाता है।
* सत्यनिष्ठ व्यक्ति जानबूझकर और व्यवस्थित रूप से अपने हर फैसले को चुनने के कारण की सुदृढ़ता के संदर्भ में किसी दूसरे फैसले का आकलन करता है और अपने फैसले को भावनाओं की गुणवत्ता के संदर्भ में तोल सकता है। फलस्वरूप, वह उन सकारात्मक या नकारात्मक भावनाओं के स्रोतों की पहचान करने में भी सक्षम हो सकता है।
* दूसरी ओर, जिन व्यक्तियों के कार्य उनके विश्वास के विपरीत होते हैं, उनमें सत्यनिष्ठा की कमी होती है। उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है क्योंकि इनका आंतरिक नियंत्रण इतने कमजोर होते हैं कि उनका व्यवहार अप्रत्याशित और असंगत हो जाता है।
* उच्च स्तर की व्यक्तिपरक जिम्मेदारी बनाए रखना न केवल हमारी संपूर्णता, आत्म सम्मान और पहचान की भावना के लिए महत्वपूर्ण है (यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है) बल्कि हमारी स्पष्ट जिम्मेदारी की पूर्ति के लिए भी महत्वपूर्ण है।
* यह सुझाव दिया गया है कि सत्यनिष्ठा में न केवल हमारे आंतरिक बल्कि हमारे संबंधों में भी पूर्णता शामिल है।
* इसके अलावा सत्यनिष्ठा न तो एक एकल चरित्र विशेषता है और न ही भूमिकाओं तक सीमित है, बल्कि “दुनिया में महसूस किए जाने वाले अनुभवों की एक परिष्कृत स्थिति है जिसमें नैतिक निर्णय, रचनात्मकता और सहज क्षमता के साथ–साथ तर्कसंगत विश्लेषणात्मक शक्तियां शामिल होती हैं”।
* सत्यनिष्ठा को इस प्रकार समझा जा सकता है:
* स्वयं के एकीकरण के रूप में सत्यनिष्ठा
* पहचान बनाए रखने के रूप में एकीकरण
* किसी मान्यता या विचार को समर्थन देने के रूप में सत्यनिष्ठा
* नैतिक उद्देश्य के रूप में सत्यनिष्ठा एवं
* एक सद्गुण के रूप में सत्यनिष्ठा

इस प्रकार, सत्यनिष्ठा न तो एक एकल चरित्र विशेषता है और न ही किसी विशेष भूमिका तक ही सीमित है। सत्यनिष्ठा रखने वाले प्रशासक दूसरों के विश्वास पात्र बन जाते हैं क्योंकि उनकी कथनी और करनी सुसंगत होती हैं। और यही वह विश्वास है जो एक संगठन को एकीकृत करता है।

**Q 3. (a) What do you understand by Civil Services neutrality? Why is neutrality one of the most important foundational values for a civil servant? (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:**

Public/Civil service values and Ethics in Public administration: Status and problems; ethical concerns and dilemmas in government and private institutions; laws, rules, regulations and conscience as sources of ethical guidance; accountability and ethical governance; strengthening of ethical and moral values in governance.

**Decoding the Question:**

* In Introduction, define what is civil services neutrality?
* In Body, explain the benefits of this value in civil services.
* What are the disadvantages if neutrality is not observed?

**Answer:**

Civil services neutrality is one of the foundational values that should be imbibed by a civil servant. Neutrality means that a civil servant should not have any political affiliations and that change of political leadership should have no effect on the civil servant offering unbiased technical advice to his political master. Neutrality requires that a civil servant can’t campaign or join any political party and should serve every politician without fear or favour.

* Civil services neutrality has helped in the growth of merit system which ensures that only the best and the brightest are made civil servants.
* A neutral civil servant will have the trust of his political boss in the objectivity of his advice. His advice will be given due importance. In a democracy, political executive come and go, but permanent executive who are neutral are needed to ensure continuity in the administration.
* If neutrality is not observed by civil servants, then it will lead to a system of nepotism. The quality of public services will soon decline.
* Also, it will see a breakdown of the civil servant-minister relationship as the latter will lose trust and faith in the civil servant. For any system to function efficiently, its team members must work collectively and that will only happen if they have faith in each other’s intentions. Without neutrality this faith can never be established.

The recent trend of using transfer and posting to reward the corrupt and punish the honest is a threat to civil services neutrality. There is a need to guard against this trend. A strong and enforceable code of ethics for civil servants as well as ministers is needed to maintain the trust between the two. Ideologies of parties change with each election. In such a scenario, a neutral and depoliticized bureaucracy is the foremost requirement. Hence, every civil servant must foremost imbibe the value of neutrality to serve the system to the best of his abilities.

1. **(a) सिविल सेवा तटस्थता (Civil Services neutrality) से आप क्या समझते हैं? किसी सिविल सेवक के लिए तटस्थता सबसे महत्वपूर्ण आधारभूत मूल्यों में से एक क्यों है। (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:** लोक प्रशासन में लोक/सिविल सेवा मूल्य और नैतिकता: स्थिति और समस्याएं; सरकारी और निजी संस्थाओं में नैतिकता को लेकर चिंताएं और दुविधाएं; नियम, कानून, नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में नियम और विवेक; जवाबदेही और नैतिक शासन; शासन में नीतिपरक और नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना।

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, सिविल सेवा तटस्थता क्या है? परिभाषित कीजिये।**
* **मुख्य भाग में, सिविल सेवा के दौरान इस मूल्य के लाभों की व्याख्या कीजिये।**
* **तटस्थता का पालन न किए जाने पर क्या हानि होती है?**

**उत्तर:**

सिविल सेवा तटस्थता (Civil Services neutrality) उन मूलभूत मूल्यों में से एक है जिसे किसी सिविल सेवक को सच्चे मन से आत्मसात कर लेना चाहिए। तटस्थता का अर्थ है कि सिविल सेवक की कोई राजनीतिक संबद्धता नहीं होनी चाहिए और राजनीतिक नेतृत्व के परिवर्तन का उस सिविल सेवक पर कोई प्रभाव नहीं होना चाहिए और जिससे वह अपने राजनीतिक शासक को निष्पक्ष तकनीकी सलाह देता रहे। तटस्थता की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि एक सिविल सेवक किसी भी राजनीतिक दल में या उसके प्रचार में शामिल नहीं हो सकता है, उसे हर राजनेता की सेवा बिना किसी डर या पक्षपात के करनी चाहिए।

* सिविल सेवा तटस्थता ने योग्यता की प्रणाली को विकसित करने में मदद की है जो यह सुनिश्चित करती है कि केवल सबसे अच्छे और प्रतिभाशाली व्यक्ति को ही सिविल सेवक बनाया जाए।
* एक तटस्थ सिविल सेवक को अपनी सलाह की निष्पक्षता में अपने राजनीतिक मालिक का भरोसा होगा। लोकतंत्र में उनकी सलाह को उचित महत्व दिया जाएगा, राजनीतिक कार्यपालिका आती जाती रहती हैं, लेकिन स्थायी कार्यपालिका जो तटस्थ होती है और प्रशासन में निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक होती है।
* यदि सिविल सेवकों द्वारा तटस्थता का पालन नहीं किया जाता है, तो यह भाई - भतीजावाद की व्यवस्था को जन्म देगा। सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता में जल्द ही गिरावट आएगी।
* साथ ही, यह सिविल सेवक और मंत्री के रिश्ते को भी तोड़ देगा क्योंकि मंत्री का अपने साथ काम करने वाले सिविल सेवक पर से भरोसा टूट जाएगा। किसी भी प्रणाली के कुशलतापूर्वक कार्यकरण को सुनिश्चित करने के लिए उसकी टीम के सदस्यों को सामूहिक रूप से काम करना होगा और यह तभी हो पाएगा जब उन्हें एक दूसरे के इरादों पर विश्वास होगा। तटस्थता के बिना यह विश्वास कभी स्थापित नहीं हो सकता है।

भ्रष्टाचारियों को पुरस्कृत करने एवं ईमानदार को दंडित करने के लिए स्थानांतरण और पदस्थापना (transfer and postings) का उपयोग करने की हालिया प्रवृति सिविल सेवा तटस्थता के लिए खतरा है। इस प्रवृति से बचने की जरूरत है। सिविल सेवकों के साथ- साथ मंत्रियों के लिए भी एक मजबूत और लागू करने योग्य आचार संहिता की आवश्यकता है जिससे दोनों के बीच विश्वास बना रहे। पार्टियों की विचारधारा हर चुनाव के साथ बदलती है। ऐसे परिदृश्य में, एक तटस्थ और गैर- राजनीतिक नौकरशाही सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। अत:, प्रत्येक सिविल सेवक को अपनी क्षमता के अनुसार प्रणाली की सेवा करने के लिए तटस्थता के मूल्य को सबसे पहले आत्मसात करना चाहिए।

**3 (b) “If you want others to be happy, practice compassion. If you want to be happy, practice compassion”. In what ways can a compassionate public official be more useful for realizing public service goals? (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:** Ethics and Human Interface: Essence, determinants and consequences of ethics in-human actions; dimensions of ethics.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, define the meaning of compassion.**
* **In Body,**
* **Discuss how compassion leads to happiness.**
* **Explain how compassion is relevant in public services.**
* **Conclude on the basis of above points.**

**Answer:**

Compassion is defined as the feeling that arises when you are confronted with other’s suffering and feel motivated to relieve that suffering. It is the “unselfish concern for the welfare of others”. Compassion involves actions based on the feeling of empathy. It involves self and others and thus has the potential to create all round happiness.

One reason compassion makes us happy is that it broadens our perspective beyond ourselves. And our action, informed by empathy towards others, creates happiness for others, through:

* Increasing kindness for oneself and others.
* Developing profound levels of calmness and resilience in traumatic situations.
* Helping calm the mind and directing thoughts in a positive direction.
* Sharpening the ability to focus and to be more effective.
* Giving access to a variety of self-care skills and techniques.

**For example:** setting up of shelter homes by public servants or social workers during winters is an act of compassion. It pleases both the giver and the receiver.

**Usefulness of compassion in public service:**

* Increases the ability to handle stressful work situations, which are very usual in day-to-day routine of a public servant. For example, resilience in the face of adversity or public protest.
* Leads to better engagement and collaboration with people who are being served.
* Enhanced insight, brainstorming, and innovation with peers and colleagues.
* Better strategic thinking and decision-making skills even in adverse situations.
* Decreased job overwhelms, increased job satisfaction.
* Compassionate people value learning, adaptability, and growth in different spheres of work.
* It is required to tackle a variety of challenging problems such as shrinking budgets, new methods of community outreach and responding to natural disasters.
* Compassion training can serve the needs of a range of public and social service authorities, such as government workers, NGOs, international organizations, public service consultants and professionals like doctors. Compassion training encourages people to take action in a new way – by slowing down, paying attention, and gaining an awareness of the inner resources at their disposal.

The use of Gandhiji’s talisman by the district administration of Kozhikode in Kerala to set up the project, ‘Compassionate Kozhikode’, which helps institutions like mental health centres, children’s home, old age home etc. is an example of compassion being an effective element of public service.

1. **(b) “यदि आप चाहते हैं कि दूसरे खुश रहें तो करुणा (compassion) का भाव रखिये। यदि आप खुश रहना चाहते हैं तो करुणा का अभ्यास कीजिए” । लोक सेवा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक करुणाशील सरकारी अधिकारी किस तरह से अधिक उपयोगी हो सकता है? (150 शब्द 10 अंक)**

**वाक्यांश:** नैतिकता और मानवीय इंटरफेस: सार, निर्धारक, और मानवीय कार्यों में नैतिकता के परिणाम नैतिकता के आयाम

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, करुणा के अर्थ को परिभाषित कीजिये।**
* **मुख्य भाग में,**
* चर्चा कीजिये कि करुणा कैसे खुशी की ओर ले जाती है
* लोक सेवाओं के लिए करुणा कैसे प्रासंगिक है, इसकी व्याख्या कीजिये।
* उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष निकालें।

**उत्तर:**

करुणा (compassion) से तात्पर्य ऐसी भावना से है, जो उस समय उत्पन्न होती है जब आप दूसरों के दुखों को महसूस करते हैं और उस पीड़ा को दूर करने के लिए प्रेरित महसूस करते हैं। यह दूसरों के कल्याण के लिए निःस्वार्थ चिंता का भाव होता है। करुणा में सहानुभूति की भावनाओं के आधार पर कार्य शामिल होता है। इसमें स्वयं और दूसरों को शामिल किया जाता है और इस प्रकार करुणा भाव में सर्वांगीण खुशी पैदा करने की क्षमता है। करुणा हमें खुश करती है इसका एक कारण यह है कि यह हमारे दृष्टिकोण को स्वयं से परे विस्तृत करती है और दूसरों के प्रति सहानुभूति की बात को ध्यान में रखते हुए, हमारे कार्यों से दूसरों को खुशी प्रदान करते हैं:-

* अपने और दूसरों के लिए दया के भाव को बढ़ाना
* दर्दनाक स्थितियों में शांति और लचीलेपन का गहरा स्तर विकसित करना
* मन को शांत करने और विचारों को सकारात्मक दिशा में निर्देशित करने में मदद करना
* ध्यान केंद्रित करने और अधिक प्रभावी होने की क्षमता को तेज करना
* विभिन्न प्रकार के स्व- देखभाल कौशल और तकनीकों तक पहुँच प्रदान करना

**उदाहरण के लिए:**

शीतऋतु के दौरान लोक सेवकों या सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा आश्रय गृहों की स्थापना करना करुणा का कार्य है यह ऐसा काम है जिसमें कुछ देने वाले और कुछ लेने वाले दोनों को ही प्रसन्नता की अनुभूति होती है।

**लोक सेवा में करुणा की उपयोगिता:**

* तनावपूर्ण कार्य स्थितियों को संभालने की क्षमता को बढ़ाती है जो एक लोक सेवक के दिन प्रतिदिन की सामान्य दिनचर्या हैं। उदाहरण के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों या सार्वजनिक विरोध का सामना करने में लचीलापन।
* जिन लोगों की सेवा की जा रही है, उन लोगों के साथ बेहतर जुड़ाव और सहयोग की ओर ले जाती है।
* साथियों और सहकर्मियों के साथ बढ़ी हुई अंतर्दृष्टि विचार- मंथन और नवाचार
* प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बेहतर रणनीतिक सोच और निर्णय लेने का कौशल
* कार्य में व्यग्रता घटती है और संतुष्टि बढ़ती है।
* दयालु लोग कार्य के विभिन्न क्षेत्रों में अधिगम, अनुकूलन क्षमता और विकास को महत्व देते हैं
* विभिन्न प्रकार की चुनौतीपूर्ण समस्याओं से निपटने के लिए करुणा की आवश्यकता है जैसे कि कम होता बजट, सामुदायिक पहुँच के नए तरीके और प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना।
* करुणा प्रशिक्षण सरकारी कर्मचारियों, गैर सरकारी संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, लोक सेवा सलाहकारों और डॉक्टरों जैसे पेशेवरों और सार्वजनिक और सामाजिक सेवा प्राधिकरणों की एक श्रंखला की जरूरतों को पूरा कर सकता है। करुणा प्रशिक्षण लोगों को आराम से, ध्यान देकर और इसके अपने आंतरिक संसाधनों के बारे में जागरूकता प्राप्त करके नए तरीके से कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

केरल के कोझीकोड के जिला प्रशासन द्वारा गांधीजी के जंतर का उपयोग कर ‘करुणा कोझीकोड’ परियोजना की स्थापना की गई है जो कि मानसिक स्वास्थ्य केंद्र, बाल गृह, वृद्धाश्रम आदि संस्थाओं की मदद करता है। यह परियोजना करुणा, जो लोक सेवा का एक प्रभावी तत्व है, का उदाहरण है।

**Q 4. (a) Young people with ethical conduct are not willing to come forward to join active politics. Suggest steps to motivate them to come forward. (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:**Ethics and Human Interface: Essence, determinants and consequences of ethics in-human actions; dimensions of ethics; ethics - in private and public relationships.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, explain the context (in brief)**
* **In Body,**
* **Discuss the possible reasons behind non-participation of youth in active politics.**
* **Suggest some steps need to be taken to motivate youth to join in active politics.**
* **Conclude, by mentioning the importance.**

**Answer:**

India is comparatively a young democracy with 65% of the population is under 35 years of age. Despite favouring demography, youth play a very minimal role in active politics. The youth has been negative when it comes to participation in active politics, especially those with some ethical conduct. This has created a situation where only the unworthy and corrupt get elected, creating a culture of misgovernance.

As per the 2014 data, India still elects the oldest cabinet, and only 12 Members of Parliament are below 30 years of age. The inclusion of youth with ethical conduct in formal politics is important. With involvement of youth with moral conduct, fresh ideas and new leadership help to overcome authoritarian practices.

**Possible reasons behind non-participation of youth in active politics:**

* **Avoid Violence:** There is a popular opinion that politics is marred with violence, and this may affect their normal life including their families.
* **High Entry Barrier:** Entry into politics is difficult. They fear that their ethical power cannot compete with the money and muscle power of modern-day politicians as they cannot be as ruthless as unethical politicians in the pursuance of power. They are also worried as their clean reputation may be spoiled in the dirty game of politics.
* **Social Stigma:** Politicians are viewed as corrupt and evil. Therefore, it is not the aspiration of people to become one. This is a rare exception that someone encourages his/her child to become a politician.
* **Pre-defined Notion on Politics:** Most of the younger generation are of the belief that politics is dirty and corrupt and only the filthy can survive. They think that in order to participate in politics one has to become corrupt, which will violate their ethical beliefs.
* **Family Discouragement:** India follows a family system. Most families in India discourage their relatives from joining politics due to the poor image of politicians and fear of harm to family by criminal politicians.
* **No Role Model:** Role model influences people especially the youth to participate in a certain field of his/her. The current scenario of politics lacks the existence of such a role model who in actual sense motivates the youth with his/her decisions and actions.

Politics is an important aspect for the governance of any country. It involves the activities associated with the governance of a country. It needs young minds with new ideas for better discussion on policies, formulation and implementation of policies and programmes.

**Suggested Steps:**

* **Encourage Participation:**  Encourage participation in political debates and school and university elections to raise political awareness and check the indifference creeping in the youth towards politics.
* **Dismantling Barriers:** We then need to work on the challenge of dismantling barriers to entry. For example, the enormous amount of money is now required to contest almost any MLA or MP election. For this state funding can be explored.
* **Election Reforms:** Electoral reforms have to be top priority. Electoral spending and campaign finance are at the heart of large-scale corruption in India. A lot of people do not join politics due to this. So, we need better accounting and tighter auditing of electoral funding.
* **Youth Parliament:** It must be conducted regularly to instill interest in political issues and desire to become political leader. Many people lack knowledge of such platforms. Thus, awareness campaigns regarding youth parliaments must be made especially at grass-root levels.
* **Emotional Aspect of Society and Nation:** Individuals with ethical competence are usually emotional when issue arises regarding nation and society as a whole. Right level of motivation and persuasion will definitely allow them to cross the barriers for the better good.

In the current situation when our country is at a critical stage, there is a requirement for suitable political leaders who are not only professionally qualified but also smart, intelligent, educated and ethically competent. It therefore required some young leaders with enthusiasm, morality and diligence in Indian politics.

1. **(a) नैतिक आचरण वाले युवा सक्रिय राजनीति में शामिल होने के लिए आगे आने को तैयार नहीं हैं। उन्हें आगे आने के लिए प्रेरित करने के उपाय सुझाइए। (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:**नैतिकता और मानव इंटरफेस: मानव क्रियाओं में नैतिकता का सार, निर्धारक और परिणाम; नैतिकता के आयाम; नैतिकता - निजी और सार्वजनिक संबंधों में।

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, संदर्भ की व्याख्या कीजिए (संक्षेप में)**
* **मुख्य भाग में,**

1. **सक्रिय राजनीति में युवाओं के भाग न लेने के संभावित कारणों की विवेचना कीजिए।**
2. **युवाओं को सक्रिय राजनीति में शामिल होने के लिए प्रेरित करने के लिए कुछ कदम उठाने की आवश्यकता का सुझाव दीजिए।**

* **महत्व का उल्लेख करते हुए समापन कीजिए।**

**उत्तर:**

भारत तुलनात्मक रूप से एक युवा लोकतंत्र है जिसकी 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। जनसांख्यिकी के पक्ष में होने के बावजूद, युवा सक्रिय राजनीति में बहुत कम भूमिका निभाते हैं। जब सक्रिय राजनीति में भाग लेने की बात आती है, खासकर कुछ नैतिक आचरण वाले युवा नकारात्मक रहे हैं। इसने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जहां केवल अयोग्य और भ्रष्ट ही चुने जाते हैं, जिससे कुशासन की संस्कृति पैदा होती है।

2014 के आंकड़ों के अनुसार, भारत अभी भी सबसे वृद्ध कैबिनेट का चुनाव करता है, और केवल 12 संसद सदस्य 30 वर्ष से कम आयु के हैं। औपचारिक राजनीति में नैतिक आचरण वाले युवाओं को शामिल करना महत्वपूर्ण है। नैतिक आचरण, नए विचारों और नए नेतृत्व के साथ युवाओं की भागीदारी से सत्तावादी कुप्रथाओं को दूर करने में मदद मिलती है।

**सक्रिय राजनीति में युवाओं के भाग न लेने के संभावित कारण:**

* **हिंसा से बचाव:** एक लोकप्रिय राय है कि राजनीति में हिंसा होती है और इससे उनके परिवारों सहित उनका सामान्य जीवन प्रभावित हो सकता है।
* **उच्च प्रवेश बाधाएं:** राजनीति में प्रवेश मुश्किल है। उन्हें डर है कि उनकी नैतिक शक्ति आधुनिक राजनेताओं के धन और बाहुबल का मुकाबला नहीं कर सकती क्योंकि वे सत्ता के लालच में अनैतिक राजनेताओं की तरह निर्दयी नहीं हो सकते। वे इस बात को लेकर भी चिंतित हैं कि राजनीति के गंदे खेल में उनकी स्वच्छ प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती है।
* **सामाजिक कलंक:** राजनेताओं का व्यक्तित्व भ्रष्ट और दुष्ट माना जाता है। इसलिए, यह लोगों की एक राजनेता बनने की आकांक्षा नहीं होती है। अपने बच्चे को राजनेता बनने के लिए प्रोत्साहित करने के उदहारण अपवादस्वरूप ही देखने को मिलते हैं।
* **राजनीति के संबंध में पूर्वाग्रह:** अधिकांश युवा पीढ़ी का मानना है कि राजनीति गंदी और भ्रष्ट होती है और केवल गंदे लोग ही इसमें टिके रह सकते हैं। वे सोचते हैं कि राजनीति में भाग लेने के लिए भ्रष्ट होना पड़ता है, जो उनके नैतिक विश्वासों का उल्लंघन होगा।
* **पारिवारिक हतोत्साहन:** भारत एक परिवार प्रणाली का अनुसरण करता है। भारत में अधिकांश परिवार राजनेताओं की खराब छवि और आपराधिक राजनेताओं द्वारा परिवार को नुकसान पहुंचाने के डर के कारण अपने रिश्तेदारों को राजनीति में शामिल होने से हतोत्साहित करते हैं।
* **कोई रोल मॉडल नहीं:** रोल मॉडल लोगों को, विशेष रूप से युवाओं को अपने एक निश्चित क्षेत्र में भाग लेने के लिए प्रभावित करता है। राजनीति के वर्तमान परिदृश्य में ऐसे रोल मॉडल के अस्तित्व का अभाव है जो वास्तविक अर्थों में युवाओं को अपने निर्णयों और कार्यों से प्रेरित करता हो।

राजनीति किसी भी देश के शासन के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसमें किसी देश के शासन से जुड़ी गतिविधियां शामिल होती हैं। नीतियों और कार्यक्रमों के निर्माण और कार्यान्वयन पर बेहतर चर्चा के लिए राजनीति में नए विचारों वाले नवयुवकों की जरूरत है।

**सुझाए गए कदम:**

* **भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने और राजनीति के प्रति युवाओं में व्याप्त उदासीनता को दूर करने के लिए राजनीतिक परिचर्चा और विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के चुनावों में भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
* **बाधाओं को दूर करना:** इसके बाद हमें प्रवेश बाधाओं को दूर करने की चुनौती पर काम करने की जरूरत है। उदाहरण के लिए, वर्तमान में किसी भी विधायक या सांसद का चुनाव लड़ने के लिए भारी मात्रा में धन की आवश्यकता होती है। इसके लिए राज्य द्वारा वित्त पोषण का विकल्प अपनाया जा सकता है।
* **चुनाव सुधार:** चुनाव सुधार सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। चुनावी खर्च और चुनावी अभियानों का वित्तपोषण भारत में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के केंद्र में हैं। इसके कारण बहुत से लोग राजनीति में नहीं आते हैं। इसलिए हमें चुनावी वित्तपोषण का बेहतर लेखा-जोखा रखने और निष्पक्ष एवं कड़े लेखा परीक्षण (ऑडिटिंग) की आवश्यकता है।
* **युवा संसद:** राजनीतिक मुद्दों में रुचि पैदा करने और राजनीतिक नेता बनने की आंकाक्षा पैदा करने के लिए नियमित रूप से युवा संसद का आयोजन किया जाना चाहिए। बहुत से लोगों को ऐसे मंचों की जानकारी नहीं होती है। इस प्रकार, युवा संसदों के बारे में जागरूकता अभियान, विशेष रूप से जमीनी स्तर पर चलाया जाना चाहिए।
* **समाज और राष्ट्र का भावनात्मक पहलू:** नैतिक क्षमता वाले व्यक्ति आमतौर पर तब भावुक होते हैं जब राष्ट्र और समाज के संबंध में कोई मुद्दा उठता है। प्रेरणा और अनुनय का सही स्तर, निश्चित रूप से उन्हें सुकार्यों के लिए बाधाओं को पार करने में सक्षम बनाएगा।

वर्तमान स्थिति में जब हमारा देश एक महत्वपूर्ण चरण में है, ऐसे योग्य राजनीतिक नेतृत्त्वकर्ताओं की आवश्यकता है जो न केवल पेशेवर रूप से योग्य हों बल्कि स्मार्ट, बुद्धिमान, शिक्षित और नैतिक रूप से सक्षम हों। इसलिए इसे भारतीय राजनीति में उत्साह, नैतिकता और परिश्रम वाले युवा नेताओं की आवश्यकता है।

**4 (b) Open government is an even more comprehensive concept than transparency and freedom of information. Elaborate. (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:** Quality of service delivery, Utilization of public funds, challenges of corruption.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, define transparency.**
* **In Body, explain how open government is an even more comprehensive concept than transparency and freedom of information?**
* **Conclude, with an opinion.**

**Answer:**

Transparency is an essential feature of open government. Transparency means that information about the activities of public bodies is created and is available to the public, with limited exceptions, in a timely manner, in open data formats and without restrictions on reuse. Transparency mechanisms must include the disclosure of information in response to requests from the public and proactive publication by public bodies. Key information about private bodies should be available either directly or via public bodies.

But open government has two other essential elements. They are participation and accountability. Participation means that the public can engage directly in the consideration of policy options and decision making and can contribute ideas and evidence that lead to policies, laws, and decisions which best serve society and broad democratic interests. Governments should actively seek to mobilize citizens to engage in public debate. Mechanisms should exist which permit the public to participate at their own initiative and to trigger policy debates on matters of concern.

An accountable government is one which makes itself answerable to the public, upholding standards of behaviour and integrity, and both explaining and taking responsibility for its decisions and actions. Accountability requires that rules, regulations and mechanisms be in place governing the exercise of public power and the spending of public funds. Specific and detailed measures are required to reduce corruption risks, to identify and prevent potential conflicts of interest, and to guard against illicit enrichment. There should be protections for those who expose wrongdoing.

Thus, in an open government openness through transparency becomes a means to greater civic participation in an enabled environment, where there is effective free flow of information both ways to see through the working of government; and to verify whether or not public servants are meeting their obligation to expectations of citizen; All four component of accountability, i.e., answerability, sanction, redress and system improvement ensure responsiveness of government and finally civic engagements in the process of governance, in the form of people’s planning, participatory budgeting, corruption watch by citizen audit etc. makes it (open government) the new democratic culture of an open society toward which every liberal democracy is moving.

1. **(b) खुली सरकार पारदर्शिता और सूचना की स्वतंत्रता से कहीं अधिक व्यापक अवधारणा है। विस्तृत चर्चा कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:** सेवा वितरण की गुणवत्ता, सार्वजनिक धन का उपयोग, भ्रष्टाचार की चुनौतियां।

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, पारदर्शिता को परिभाषित कीजिए।**
* **मुख्य भाग में, स्पष्ट कीजिए कि कैसे खुली सरकार पारदर्शिता और सूचना की स्वतंत्रता से भी अधिक व्यापक अवधारणा है?**
* **एक राय के साथ निष्कर्ष निकालिए।**

**उत्तर:**

पारदर्शिता खुली सरकार की एक अनिवार्य विशेषता है। पारदर्शिता का अर्थ है कि सार्वजनिक निकायों की गतिविधियों के संबंध में सूचना तैयार की गई है और सीमित अपवादों के साथ, समयोचित ढंग से, खुले डेटा प्रारूपों में और पुन: उपयोग पर प्रतिबंध के बिना जनता के लिए उपलब्ध है। पारदर्शिता तंत्र में जन अनुरोधों की प्रतिक्रिया में सूचना का प्रकटीकरण और सार्वजनिक निकायों द्वारा सक्रिय प्रकाशन शामिल होना चाहिए। निजी निकायों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी सीधे या सार्वजनिक निकायों के माध्यम से उपलब्ध होनी चाहिए।

लेकिन खुली सरकार के दो अन्य आवश्यक तत्व हैं। ये भागीदारी और जवाबदेही हैं। भागीदारी का अर्थ है कि जनता सीधे नीतिगत विकल्पों और निर्णय लेने के विचार में संलग्न हो सकती है और उन विचारों और साक्ष्यों का योगदान कर सकती है जो ऐसे नीतियों, कानूनों और निर्णयों को जन्म देती हैं जो समाज और व्यापक लोकतांत्रिक हितों की सर्वोत्तम सेवा करते हैं। सरकारों द्वारा नागरिकों को सार्वजनिक परिचर्चा में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। ऐसे तंत्र मौजूद होने चाहिए जो जनता को महत्वपूर्ण मामलों पर नीतिगत परिचर्चा हेतु स्वयं पहल करने और इसे आगे बढ़ाने में सक्षम बनाए।

एक जवाबदेह सरकार वह है जो स्वयं को जनता के प्रति जवाबदेह बनाती है, । जवाबदेही की आवश्यकता है कि सार्वजनिक शक्ति के प्रयोग और सार्वजनिक धन के खर्च को नियंत्रित करने वाले नियम, विनियम और तंत्र मौजूद हों। भ्रष्टाचार के जोखिम को कम करने, हितों के संभावित टकरावों की पहचान करने और उन्हें रोकने और अवैध संवर्धन से बचाव के लिए विशिष्ट और विस्तृत उपायों की आवश्यकता है। गलत कामों को उजागर करने वालों की सुरक्षा सुनिश्चित होनी चाहिए।

इस प्रकार, एक खुले सरकारी खुलेपन में पारदर्शिता के माध्यम से एक सक्षम वातावरण में अधिक से अधिक नागरिक भागीदारी का साधन बन जाता है, जहां सरकार के कामकाज के माध्यम से देखने के दोनों तरीकों से सूचना का प्रभावी मुक्त प्रवाह होता है; और यह सत्यापित करने के लिए कि लोक सेवक नागरिकों की अपेक्षाओं के प्रति अपने दायित्व को पूरा कर रहे हैं या नहीं; जवाबदेही के सभी चार घटक यानी जवाबदेही, मंजूरी, निवारण और प्रणाली में सुधार सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करते हैं और अंत में शासन की प्रक्रिया में नागरिक जुड़ाव, लोगों की योजना, भागीदारी बजट, नागरिक लेखा परीक्षा द्वारा भ्रष्टाचार की निगरानी आदि के रूप में इसे (खुली सरकार) एक खुले समाज की नई लोकतांत्रिक संस्कृति बनाता है, जिसकी ओर प्रत्येक उदार लोकतंत्र बढ़ रहा है।

**Q 5. (a) Ensuring accountability in the administration just adds another layer in the bureaucratic process. Examine. Differentiate between accountability and responsibility. Suggest some measures through which administrative accountability can be made more effective in India. (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:** Accountability and ethical governance

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, briefly explain accountability.**
* **In Body, explain the difference between accountability and responsibility.**
* **Conclude, by explaining how to ensure effective accountability?**

**Answer:**

Accountability means to take ownership of the outcomes of an action and address the issues arising out of it fairly and promptly. Thus, it involves two parts: answerability as well as enforcement. Sometimes, transparency, which is the first step to extract accountability, is also included.

It is argued that accountability compromises efficiency by adding another bureaucratic layer:

* The officers spend their time in maintaining records or answering RTIs etc., which can otherwise be utilized to perform executive tasks.
* It makes them status quoist in their conduct. They may stop taking decisions for fear of public scrutiny.

However, accountability is one of the cornerstones of good governance. Evaluating the effectiveness of public officials/bodies ensures that they are performing to their full potential, providing value for money in the provision of public services, instilling confidence in the government and being responsive to the community they are meant to be serving.

An office which is accountable demonstrates commitment and sincerity to duty and is focused on achieving outcomes despite setbacks. It maintains a strong focus on the priorities and swiftly responds to changing requirements.

**Difference between and Accountability and Responsibility:**

* In administrative parlance, responsibility refers to being in-charge of certain duties which are expected to be performed by virtue of being in a certain post/position. Accountability is one step ahead. It includes answerability, i.e., being liable for the outcomes achieved due to performance of the duty. Therefore, accountability can be held on to a person only after the task is done.
* For example, A judge is responsible for delivering a judgment but is not accountable if the outcomes are not as expected. A DM is both responsible as well as accountable for ensuring compliance with RTE in her district.
* In individualistic terms, responsibility can also refer to what one expects of oneself or the others. To be morally responsible for something, is to be worthy of particular kind of reaction, such as praise or blame in pursuance of the act.
* For example, helping a destitute is a responsibility of the affluent and empathetic. However, they cannot be held accountable for not helping them. They can be condemned, if one wishes so.
* Also, responsibility can be delegated but accountability cannot be.

**Ensuring effective Accountability:**

* Protection of Whistle-blowers through legislation.
* Social Audits by local communities, NGOs can enhance accountability in public service delivery, for instance in MGNREGA.
* Using Information and Technology: electronic service delivery mechanisms and maintain digital records can revolutionize accountability.
* Encouraging Citizen’s initiative: For example, RTI being accessible in local languages.
* Promoting Competition and discouraging monopolistic attitude among public service sectors.

1. **(a) प्रशासन में जवाबदेही सुनिश्चित करना नौकरशाही प्रक्रिया में एक और स्तर जोड़ता है। परीक्षण कीजिए। जवाबदेही और जिम्मेदारी के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। भारत में प्रशासनिक उत्तरदायित्व को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कुछ उपाय सुझाइए। (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:** जवाबदेही और नैतिक शासन

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, जवाबदेही को संक्षेप में समझाइए।**
* **मुख्य भाग में, जवाबदेही और जिम्मेदारी के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।**
* **प्रभावी जवाबदेही कैसे सुनिश्चित की जाए, इसकी व्याख्या करते हुए निष्कर्ष निकालिए?**

**उत्तर:**

जवाबदेही का अर्थ किसी कार्रवाई के परिणामों का स्वामित्व लेना और उससे उत्पन्न होने वाले मुद्दों को निष्पक्ष और शीघ्रता से संबोधित करना है । इस प्रकार, इसमें दो भाग शामिल हैं: जवाबदेही और प्रवर्तन। कभी-कभी, पारदर्शिता, जो जवाबदेही स्थापित करने का पहला कदम है, को भी शामिल किया जाता है।

यह तर्क दिया जाता है कि जवाबदेही एक और नौकरशाही स्तर जोड़कर दक्षता से समझौता करती है:

* अधिकारी अपना समय, रिकॉर्ड बनाए रखने या आरटीआई आदि का जवाब देने में लगाते हैं, जिसका उपयोग अन्यथा कार्यकारी कार्यों को करने के लिए किया जा सकता है।
* यह उन्हें उनके आचरण में यथास्थितिवादी बनाता है। सार्वजनिक जांच के डर से वे निर्णय लेना बंद कर सकते हैं।

हालांकि, जवाबदेही सुशासन की आधारशिलाओं में से एक है। सरकारी अधिकारियों/निकायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन यह सुनिश्चित करता है कि वे अपनी पूरी क्षमता से प्रदर्शन कर रहे हैं, सार्वजनिक सेवाओं के प्रावधान में धन के लिए मूल्य प्रदान कर रहे हैं, सरकार में विश्वास पैदा कर रहे हैं और उस समुदाय के प्रति उत्तरदायी हैं जिसकी वे सेवा कर रहे हैं।

एक जवाबदेह कार्यालय, कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्धता और ईमानदारी का प्रदर्शन करता है और असफलताओं के बावजूद परिणाम प्राप्त करने पर केंद्रित होता है। यह प्राथमिकताओं पर एक गंभीरतापूर्वक ध्यान केंद्रित करता है और बदलती आवश्यकताओं के लिए शीघ्र प्रतिक्रिया करता है।

**जवाबदेही और जिम्मेदारी के बीच अंतर:**

* प्रशासनिक भाषा में, जिम्मेदारी का तात्पर्य कुछ ऐसे कर्तव्यों का प्रभारी होने से है, जिसकी उम्मीद एक निश्चित पद / ओहदे पर होने के आधार पर की जाती है। जवाबदेही इससे एक कदम आगे है। इसमें जिम्मेदारी शामिल है, अर्थात, कर्तव्य प्रदर्शन के कारण प्राप्त परिणामों के लिए जिम्मेदार होना। इसलिए, कार्य पूरा होने के बाद ही किसी व्यक्ति के प्रति जवाबदेही तय की जा सकती है।
* उदाहरण के लिए - एक न्यायाधीश निर्णय देने के लिए जिम्मेदार होता है लेकिन यदि परिणाम अपेक्षित नहीं होते हैं तो वह जवाबदेह नहीं होता है। एक डीएम अपने जिले में आरटीई का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होने के साथ-साथ जवाबदेह भी है।
* व्यक्तिवादी शब्दों में, जिम्मेदारी का आशय यह भी हो सकता है कि कोई स्वयं से या दूसरों से क्या उम्मीद करता है। किसी चीज के लिए नैतिक रूप से जिम्मेदार होना, विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया के योग्य होना होता है, जैसे कि अधिनियम के अनुसरण में प्रशंसा या दोष।
* उदाहरण के लिए, किसी बेसहारा की मदद करना संपन्न और सहानुभूति रखने वालों की जिम्मेदारी है। हालाँकि, उनकी मदद नहीं करने के लिए उन्हें जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकता है। यदि कोई चाहे तो उनकी निंदा की जा सकती है।
* साथ ही, जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है लेकिन जवाबदेही नहीं ।

**प्रभावी जवाबदेही सुनिश्चित करना:**

* कानून के माध्यम से व्हिसल ब्लोअर का संरक्षण।
* स्थानीय समुदायों द्वारा सामाजिक लेखा परीक्षा, गैर सरकारी संगठन सार्वजनिक सेवा वितरण में जवाबदेही बढ़ा सकते हैं, उदाहरण के लिए मनरेगा में।
* सूचना और प्रौद्योगिकी का उपयोग: इलेक्ट्रॉनिक सेवा वितरण तंत्र और डिजिटल रिकॉर्ड बनाए रखने से जवाबदेही में क्रांतिकारी बदलाव आ सकता है।
* नागरिकों की पहल को प्रोत्साहित करना: उदाहरण के लिए, स्थानीय भाषाओं में आरटीआई सुलभ होना।
* सार्वजनिक सेवा क्षेत्रों के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और एकाधिकारवादी रवैये को हतोत्साहित करना।

**5 (b) Evaluate the success of RTI in bringing governance reforms in the country. Examine whether it has served the purpose it was meant for. (150 Words, 10 Marks)**

**Tag: Right to Information.**

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, write a brief about RTI.**
* **In Body, discuss the achievement of RTI.**
* **Conclude, with a way forward.**

**Answer:**

The RTI Act has completed 10 years, and there are at least 50 lakh RTI applications being filed annually. Despite all complaints about poor implementation, people have owned the law like no other. Perhaps it is the real empowerment and sense of hope that the RTI offers to every Indian citizen.

**Achievements:**

* The RTI has spawned a new breed of activism and citizenship, as it has begun to encourage a culture of asking questions. Information on issues related to public distribution system, privatization initiatives, pensions, road repairs, electricity connections, telecom complaints etc., have been sought by people through the RTI.
* It is a strong deterrent against wrongdoing in officialdom and thereby a potent tool to reduce corruption.

Though the legislation has certainly brought increased transparency in public bodies, however, accountability has still not commensurably increased.

* A vast number of organizations that should have been covered under the definition of “public authority” have not come forward pro-actively to be covered by the Act.
* Poor quality of information is provided, which forces the applicant to go on appeal. In many cases the information is not provided within 30 days. This kills the motivation to use the law and also increases the burden on the law enforcement institutions.
* It has been seen that there is lack of attitudinal change on the part of PIOs and bureaucrats, as they generally invoke the Official Secrets Act to deny the information. Thus, there is merely legal change without corresponding attitudinal change, which affects the efficacy of the act. Lack of values of transparency, responsiveness and accountability are also seen on the part of public servants. Ineffective implementation of Section 4(1)(b), which calls for pro-active suo moto disclosure of information has also been an issue.
* Lack of political will to enforce the law as is evident in attempts to dilute the Act and not adhering to the order of Central Information Commission on applying the Act to political parties has also been witnessed.
* There is still low public awareness regarding the RTI.

**Way Forward**

* Issue clear user guidelines along with spreading awareness to encourage people to use RTI.
* Impart attitudinal training to the PIOs and bureaucrats.
* Empower the Central and State Information Commissions to enforce their orders. They should also be provided with adequate manpower and infrastructure to review the implementation of the Act and take corrective actions.
* The focus should be on pro-active disclosure of information.
* Apart from technical training the public servants must also be given training in values, as highlighted by Nolan Committee on standards in public services.
  1. **(b) देश में शासन सुधार लाने में आरटीआई की सफलता का मूल्यांकन कीजिए। परीक्षण कीजिए कि क्या यह अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहा है। (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश: सूचना का अधिकार।**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में आरटीआई के बारे में संक्षेप में लिखिए।**
* **मुख्य भाग में, आरटीआई की उपलब्धि पर चर्चा कीजिए।**
* **भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण के साथ समाप्त कीजिए।**

**उत्तर:**

आरटीआई अधिनियम को 10 साल पूरे हो चुके हैं, और सालाना कम से कम 50 लाख आरटीआई आवेदन दायर किए जा रहे हैं। खराब कार्यान्वयन के बारे में सभी शिकायतों के बावजूद, संभवत: लोगों ने किसी भी अन्य कानून से अधिक इसका उपयोग किया है। शायद यह वास्तविक सशक्तिकरण और आशा की भावना है जो आरटीआई प्रत्येक भारतीय नागरिक को प्रदान करता है।

**उपलब्धियां:**

* आरटीआई ने सक्रियता और नागरिकता की एक नई प्रवृति को जन्म दिया है, क्योंकि इसने सवाल पूछने की संस्कृति को प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया है। जन वितरण प्रणाली, निजीकरण की पहल, पेंशन, सड़क मरम्मत, बिजली कनेक्शन, दूरसंचार शिकायतों आदि से संबंधित मुद्दों की जानकारी लोगों द्वारा आरटीआई के माध्यम से मांगी गई है।
* यह आधिकारिक तौर पर गलत कामों के खिलाफ एक मजबूत निवारक उपाय है और इस तरह भ्रष्टाचार को कम करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है।

यद्यपि कानून ने निश्चित रूप से सार्वजनिक निकायों में पारदर्शिता बढ़ाई है, तथापि, जवाबदेही अभी भी उस अनुपात में नहीं बढ़ी है।

* बड़ी संख्या में संगठन जिन्हें "सार्वजनिक प्राधिकरण" की परिभाषा के तहत कवर किया जाना चाहिए था, अधिनियम द्वारा कवर किए जाने के लिए सक्रिय रूप से आगे नहीं आए हैं।
* सूचना की खराब गुणवत्ता प्रदान की जाती है, जो आवेदक को अपील दायर करने के लिए बाध्य करती है। कई मामलों में 30 दिनों के भीतर जानकारी नहीं दी जाती है। यह कानून का उपयोग करने की प्रेरणा को समाप्त करता है और कानून प्रवर्तन संस्थानों पर बोझ भी बढ़ाता है।
* यह देखा गया है कि पीआईओ और नौकरशाहों की ओर से दृष्टिकोण में बदलाव का अभाव है, क्योंकि वे आम तौर पर सूचना से इनकार करने के लिए आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम का हवाला देते हैं। इस प्रकार, व्यवहारिक परिवर्तन के बिना केवल कानूनी परिवर्तन होता है, जो अधिनियम की प्रभावकारिता को प्रभावित करता है। लोक सेवकों की ओर से पारदर्शिता, जवाबदेही और जवाबदेही के मूल्यों की कमी भी देखी जाती है। धारा 4(1)(b) का अप्रभावी क्रियान्वयन, जिसके लिए सूचना के सक्रिय स्वप्रेरणा से प्रकटीकरण की आवश्यकता होती है, भी एक मुद्दा रहा है।
* कानून को लागू करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी को भी देखा गया है.जैसा कि अधिनियम को कमजोर करने के प्रयासों में स्पष्ट है और राजनीतिक दलों पर अधिनियम को लागू करने पर केंद्रीय सूचना आयोग के आदेश का पालन नहीं करने की घटनाओं में देखा जा सकता है।
* आरटीआई को लेकर अभी भी लोगों में जागरूकता कम है।

**आगे की राह:**

* लोगों को आरटीआई का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए जागरूकता फैलाने के साथ-साथ स्पष्ट उपयोग संबंधी दिशानिर्देश जारी करना।
* पीआईओ और नौकरशाहों को व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना।
* केंद्रीय और राज्य सूचना आयोगों को उनके आदेशों को लागू करने के लिए सशक्त बनाना। उन्हें अधिनियम के कार्यान्वयन की समीक्षा करने और सुधारात्मक कार्रवाई करने के लिए पर्याप्त जनशक्ति और बुनियादी ढांचा भी प्रदान किया जाना चाहिए।
* सूचना के सक्रिय प्रकटीकरण पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।
* तकनीकी प्रशिक्षण के अलावा लोक सेवकों को भी मूल्यों संबंधी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जैसा कि सार्वजनिक सेवाओं में मानकों पर नोलन समिति द्वारा उजागर किया गया है।

**Q 6. What do each of the following quotations mean to you?**

**निम्नलिखित में से प्रत्येक उध्दरण का आपके विचार से क्या अभिप्राय है?**

**6 (a) “Falsehood takes the place of truth when it results in unblemished common good.” - Tirukkural (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:** Contributions of moral thinkers and philosophers from India and the world.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, write a brief about Tirukkural.**
* **In Body,**
* **Discuss how falsehood can be normal (with examples).**
* **Discuss how falsehood can never be justified.**
* **Conclude, by an opinion.**

**Answer:**

Tirukkural is a Tamil text written by Tiruvalluar. It consists of many short couplets (a pair of successive lines of verse), that deals with everyday virtues of an individual. The text was contemporary to the Sangam age and is praised for its work on Secular ethics.

This quote stresses how even a lie can be moral and virtues when it causes an overall good. Truth-fullness is the act of being honest, open, transparent. It is generally considered as the better alternative in all circumstances. But this quote argues for the other side.

**Sometimes falsehood can be moral:**

* **Larger Narrative:** Sometimes, false and lies help us build a larger narrative which is more important than the particulars of an event. For example, an artist uses false characters, story, emotions to tell a larger story which is more important.
* **Truth Brings Pain:** There are some situations when truth only brings grief and pain. In such a situation lies always seem like a better alternative. For example, cops chasing a kid who stole bread to feed his family. Cops asks you where did he go?
* **Impractical:** Excessive stress on truth is not practical. Sometimes in real life when stakes are too high, too much stress on honesty can be detrimental. For example, even Bhagavad Gita stresses that the need to do your duty is superior to everything else.

**Falsehood can never be justified:**

* **Unknown Future:** Nobody knows what the future holds. Even lies does not guarantee happiness or welfare. Hence it is better to be honest and truthful.
* **Slippery Slope:** Lies in some occasions can open the possibilities of lies in every situation as per our convenience.
* **Tyranny:** The idea that few people can know what is objectively good for the whole society and hence lie accordingly sets dangerous precedents. This is how tyrannical rule starts.

A popular proverb says, "Path to hell is paved with good intentions." Gandhiji himself stressed the need for good means for attaining good and noble outcomes. He always believed that bad means can never lead to noble outcomes no matter how much we wish otherwise.

1. **(a) "परिणाम पूर्ण रूप से जनसाधारण के हित में होने पर असत्य, सत्य का स्थान ले लेता है।" - तिरुक्कुरल (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:** भारत और दुनिया के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान।

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, तिरुक्कुरल के बारे में संक्षेप में लिखिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **चर्चा कीजिए कि झूठा हुड कैसे सामान्य हो सकता है (उदाहरणों के साथ)।**
* **चर्चा कीजिए कि कैसे असत्य को कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता है।**
* **निष्कर्ष, एक राय से।**

**उत्तर:**

तिरुक्कुरल एक तमिल ग्रंथ है जिसे तिरुवल्लुवर ने लिखा है। इसमें कई छोटे दोहे (कविता की क्रमिक पंक्तियों की एक जोड़ी) होते हैं, जो किसी व्यक्ति के रोजमर्रा के गुणों से संबंधित होते हैं। यह ग्रंथ संगम युग के समकालीन था और धर्मनिरपेक्ष नैतिकता पर इसके कार्य के लिए इसकी प्रशंसा की जाती है।

यह उद्धरण इस बात पर जोर देता है कि कैसे एक असत्य भी नैतिक और गुण हो सकता है जब यह सबके हित का कारण बनता है। सत्यता ईमानदार, खुला, पारदर्शी होने का कार्य है। इसे आमतौर पर सभी परिस्थितियों में बेहतर विकल्प माना जाता है। लेकिन यह उद्धरण इसके दूसरे पक्ष के लिए तर्क देता है।

**कभी-कभी असत्यता नैतिक हो सकती है:**

* **बड़ा आख्यान:** कभी-कभी असत्य और झूठ हमें एक बड़ा आख्यान बनाने में मदद करते हैं जो किसी घटना के विवरण से अधिक महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण के लिए, एक कलाकार एक बड़ी कहानी बताने के लिए झूठे पात्रों, कहानियों, भावनाओं का उपयोग करता है जो अधिक महत्वपूर्ण है।
* **सच्चाई कष्टपूर्ण होती है:**कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जब सत्य केवल दुःख और पीड़ा उत्पन्न करता है। ऐसे में असत्य हमेशा एक बेहतर विकल्प लगता है। उदाहरण के लिए, पुलिस एक ऐसे बच्चे का पीछा करती है जिसने अपने परिवार का पेट भरने के लिए रोटी चुराई है। पुलिस आपसे पूछती है कि वह कहाँ गया?
* **अव्यवहारिक:** सत्य पर अत्यधिक जोर देना व्यावहारिक नहीं है। कभी-कभी वास्तविक जीवन में जब दांव बहुत अधिक होते हैं, ईमानदारी पर बहुत अधिक निर्भरता हानिकारक हो सकती है। उदाहरण के लिए, यहां तक ​​कि भगवद गीता भी इस बात पर जोर देती है कि अपने कर्तव्य को करने की आवश्यकता प्रत्येक अन्य चीज से श्रेष्ठ है।

**असत्यता को कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता:**

* **अज्ञात भविष्य:**कोई नहीं जानता कि भविष्य क्या है। असत्य भी सुख या कल्याण की गारंटी नहीं देता। इसलिए ईमानदार और सच्चा होना बेहतर है।
* **नाजुक स्थिति:** कुछ अवसरों पर हमारी सुविधा के अनुसार असत्य प्रत्येक स्थिति में असत्य की संभावनाओं को खोल सकता है।
* **अत्याचार:** यह विचार कि कुछ ही लोग जान सकते हैं कि पूरे समाज के लिए वस्तुनिष्ठ रूप से क्या अच्छा है और इसलिए तदनुसार असत्य खतरनाक मिसाल कायम करता है। इस तरह से तानाशाही शासन शुरू होता है।

एक लोकप्रिय कहावत है, " नरक का मार्ग अच्छे इरादों से प्रशस्त होता है।" गांधीजी ने स्वयं अच्छे और नेक परिणाम प्राप्त करने के लिए अच्छे साधनों की आवश्यकता पर बल दिया। वह हमेशा मानते थे कि चाहे हम कितना भी चाहें, बुरे साधन कभी भी अच्छे परिणाम नहीं दे सकते।

**6(b) “Anger and intolerance are the enemies of correct understanding.” - Mahatma Gandhi (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:** Human Values - lessons from the lives and teachings of great leaders, reformers and administrators; Contributions of moral thinkers and philosophers from India and world.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, explain the context (in brief).**
* **In Body,**
* **Explain how anger and intolerance are the enemies of correct understanding.**
* **Discuss the effects of anger and intolerance in personal life.**
* **Discuss the ways to control anger and intolerance.**
* **Conclude, be mentioning a quote or teachings of religious or other leaders.**

**Answer:**

Anger and intolerance are the negative emotions developed in response to an adverse provocation, or any threat. They are very natural human characteristics, though sometimes unwanted or irrational. Anger and intolerance restrict the rational thinking of an individual, by making him/her biased. This results in lack of correct understanding.

Correct understanding means, “a disposition to appreciate or share the feelings and thoughts of others.”

As Mahatma Gandhi said, anger and intolerance reduce such ability of correct understanding as these make an individual biased and irrational. Therefore, one must control anger and must be tolerant.

**Anger and intolerance are the enemies of correct understanding:**

* **Anger:** It is an emotional outburst, a person experiences when they feel attacked, threatened or unfairly treated. It affects the person who is angry as well as all the people who are touched by that person’s anger.
* An angry person is likely to speak harshly. Sometimes angry people hurt themselves if they are unable or out of reach of the people at whom they want to direct their anger.
* **Intolerance:** Itis a feeling that develops through a process of prejudice. It is an unwillingness to accept the views, beliefs, or behaviour that differ from one’s own, is toxic when combined with anger.
* **Correct Understanding:** It is the process where one is able to think about a persons’ views, opinions, and understanding regarding any subject matter. To understand others views and opinions, one needs to be tolerant and calm. Being angry and intolerant will lead to a situation which is conflicting, disturbing and may even lead to violence.  However, it is more often seen that intolerant people are often being used by people for their advantage to achieve political goals.
* **Examples:** Rising cases of intolerance in society like Mob lynching, communal clashes, internet shaming etc. are because of the intolerance and anger which is causing biased and radical views among masses. Evils like honour killing, acid attack by spurned lovers is because of anger at the moment. Anger does not allow rational thinking and people take up extreme steps and kill their own children/loved ones due to uncontrolled emotions.

**Effects of Anger in person’s life:**

* It often leads to bias and clouds moral judgement. For example, under provocation people resort to violence and fail to understand the repercussions their actions may cause.
* It leads to an influenced, non-objective and emotional decision, which is not based on well-thought outcomes and understanding of consequences of such decisions, which could be dangerous. For example, in anger, mobs may lynch an innocent without knowing or verifying his crime.
* Anger makes a person lose calmness and forces them to take hasty decisions which may not be correct.

**Effects of Intolerance in person’s life:**

* An intolerant person will remain ignorant to diverse opinions and beliefs and thus act according to narrow ideals. For example, generally politicians with religious background are ignorant towards issues like LGBT rights.
* Prevent correct understanding: Intolerance in society prevents correct understanding as people only see one side of the coin. For example, not all Muslim are terrorists as they are branded by some individuals which lead to development of intolerance against them and may lead to violence.
* Intolerance makes a person blind to other opinions and narrows down a person’s thinking and judgement marred by biased views.

**Ways to control anger and intolerance:**

* Encouraging ‘Sarva Dharma Sambhava’ by making people of diverse cultures to interact with each other.
* Yoga and meditation techniques to control anger is a must in a way it gives one control over one’s own mind.
* It is important to accept other views and thoughts so as to develop as a rational human being. For this education and awareness about other’s rights also plays an important role.
* Moreover, they can be controlled by speedy Justice delivery, persuasion by leaders, celebrities and well-known personalities, check on social media and provocative sites/platforms, efforts of government, public awareness, value-based education, etc.

Correct or right understanding is one of the noble eightfold paths of Buddha's teaching. It is to cultivate those qualities of mind which will allow one to have a complete and realistic apprehension of things, or as the Buddha put it, ‘a knowledge and vision of things as they really are’.

Some of the attitudes that can help the development of Right Understanding include trying to get a direct experience of something rather than relying on the opinions of others, not having preconceived ideas, not jumping to conclusions, being open to different explanations, taking time to draw conclusions, etc.

**6 (b) "क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के दुश्मन हैं।" - महात्मा गांधी (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:** मानवीय मूल्य - महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन और शिक्षाओं से सबक; भारत और दुनिया के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान।

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, संदर्भ की व्याख्या कीजिए (संक्षेप में)।**
* **मुख्य भाग में,**
* **समझाइए कि क्रोध और असहिष्णुता कैसे सही समझ के दुश्मन हैं।**
* **व्यक्तिगत जीवन में क्रोध और असहिष्णुता के प्रभावों की विवेचना कीजिए।**
* **क्रोध और असहिष्णुता को नियंत्रित करने के तरीकों पर चर्चा कीजिए।**
* **समापन, धार्मिक या अन्य नेताओं के उद्धरण या शिक्षाओं का उल्लेख कीजिए।**

**उत्तर:**

क्रोध और असहिष्णुता एक प्रतिकूल उकसावे, या किसी भी खतरे की प्रतिक्रिया में विकसित नकारात्मक भावनाएं होती हैं। ये बहुत ही स्वाभाविक मानवीय विशेषताएं हैं, हालांकि कभी-कभी अवांछित या तर्कहीन होती हैं। क्रोध और असहिष्णुता किसी व्यक्ति को पक्षपाती बनाकर उसकी तर्कसंगत सोच को सीमित कर देती है। इसका परिणाम सही समझ की कमी के रूप में सामने आता है।

सही समझ का अर्थ है, "दूसरों की भावनाओं और विचारों की सराहना करने या साझा करने का स्वभाव।"

जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था, क्रोध और असहिष्णुता सही समझ की क्षमता को कम कर देते हैं क्योंकि ये व्यक्ति को पक्षपाती और तर्कहीन बना देते हैं। इसलिए व्यक्ति को क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए और सहनशील होना चाहिए।

**क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के दुश्मन हैं:**

* **क्रोध:** यह एक भावनात्मक आवेग है, जिसे कोई व्यक्ति तब अनुभव करता है जब वह हमला, धमकी या गलत व्यवहार का सामना करते हैं। यह उस व्यक्ति को प्रभावित करता है जो क्रोधित होता है और साथ ही उन सभी लोगों को भी प्रभावित करता है जो उस व्यक्ति के क्रोध से प्रभावित होते हैं।
* क्रोधित व्यक्ति के कठोर बोलने की संभावना है। कभी-कभी क्रोधित लोग स्वयं को चोट पहुँचाते हैं यदि वे असमर्थ होते हैं या उन लोगों की पहुँच से बाहर होते हैं जिन पर वे अपना गुस्सा प्रकट करना चाहते हैं।
* **असहिष्णुता:** यह एक भावना है जो पूर्वाग्रह की प्रक्रिया से विकसित होती है। यह उन विचारों, विश्वासों या व्यवहार को स्वीकार करने की अनिच्छा है जो स्वयं के विचारों, विश्वासों या व्यवहार से भिन्न होते हैं। क्रोध के साथ संयुक्त होने पर यह खतरनाक होती है।
* **सही समझ:** यह वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति किसी भी विषय के बारे में किसी व्यक्ति के विचार, दृष्टिकोण और समझ के बारे में सोचने में सक्षम होता है। दूसरों के विचारों और दृष्टिकोणों को समझने के लिए सहिष्णु और शांत होना आवश्यक है। क्रोधित और असहिष्णु होने से ऐसी स्थिति पैदा होगी जो परस्पर विरोधी, परेशान करने वाली और यहां तक ​​कि हिंसा का कारण भी बन सकती है। हालांकि, बहुत बार यह देखा गया है कि राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए असहिष्णु लोगों का इस्तेमाल लोग अक्सर अपने फायदे के लिए करते हैं।
* **उदाहरण:** समाज में असहिष्णुता के बढ़ते मामले जैसे मॉब लिंचिंग, सांप्रदायिक झड़पें, इंटरनेट शेमिंग आदि असहिष्णुता और गुस्से के कारण हैं जो जनता के बीच पक्षपाती और कट्टरपंथी विचार पैदा करते हैं। ऑनर किलिंग, ठुकराए गए प्रेमियों द्वारा एसिड अटैक जैसी घटनाएं तत्कालीन क्रोध के कारण ही होती हैं। क्रोध तर्कसंगत रूप से सोचने नहीं देता है और लोग अत्यधिक घातक कदम उठाते हैं और अनियंत्रित भावनाओं के कारण अपने ही बच्चों / प्रियजनों को मार देते हैं।

**व्यक्ति के जीवन में क्रोध का प्रभाव:**

* यह अक्सर पूर्वाग्रह की ओर ले जाता है और नैतिक निर्णय को बदल देता है। उदाहरण के लिए, उकसावे के तहत लोग हिंसा का सहारा लेते हैं और उन नतीजों को समझने में असफल होते हैं जो उनके कार्यों का कारण हो सकते हैं।
* यह एक प्रभावित, गैर-उद्देश्यपूर्ण और भावनात्मक निर्णय की ओर ले जाता है, जो कि सुविचारित परिणामों और ऐसे निर्णयों के परिणामों की समझ पर आधारित नहीं होते हैं, जो खतरनाक हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, क्रोध में, भीड़ किसी निर्दोष को उसके अपराध को जाने या सत्यापित किए बिना पीट-पीट कर मार सकती है।
* क्रोध में एक व्यक्ति शांति खो देता है और वह जल्दबाजी में निर्णय लेने के लिए मजबूर होता है जो अधिकांशत: सही नहीं होता है।

**व्यक्ति के जीवन में असहिष्णुता के प्रभाव:**

* एक असहिष्णु व्यक्ति विविध मतों और विश्वासों से अनभिज्ञ रहेगा और इस प्रकार संकीर्ण आदर्शों के अनुसार कार्य करेगा। उदाहरण के लिए, आमतौर पर धार्मिक पृष्ठभूमि वाले राजनेता एलजीबीटी अधिकारों जैसे मुद्दों से अनभिज्ञ होते हैं।
* सही समझ में बाधक: समाज में असहिष्णुता सही समझ को रोकती है क्योंकि लोग सिक्के का केवल एक पहलू को देखते हैं। उदाहरण के लिए, सभी मुसलमान आतंकवादी नहीं होते हैं जैसा कि कुछ व्यक्तियों द्वारा ऐसा कुप्रचार किया जाता है जिससे उनके प्रति असहिष्णुता का विकास होता है और हिंसा हो सकती है।
* असहिष्णुता एक व्यक्ति को अन्य विचारों के प्रति अंधा बना देती है और पक्षपाती विचारों से प्रभावित व्यक्ति की सोच और निर्णय को संकुचित कर देती है।

**क्रोध और असहिष्णुता को नियंत्रित करने के उपाय:**

* विविध संस्कृतियों के लोगों को एक दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए प्रेरित करके ‘सर्व धर्म समभाव’ को प्रोत्साहित करना।
* क्रोध को नियंत्रित करने के लिए योग और ध्यान तकनीक एक तरह से जरूरी है जो व्यक्ति को अपने मन पर नियंत्रण प्रदान करते हैं।
* एक तर्कसंगत इंसान के रूप में विकसित होने के लिए अन्य विचारको के विचारों को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए शिक्षा और दूसरों के अधिकारों के बारे में जागरूकता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
* इसके अलावा, त्वरित न्याय वितरण, नेताओं, मशहूर और प्रसिद्ध हस्तियों द्वारा अनुनय, सोशल मीडिया और संवेदनशील स्थलों / मंचों पर जाँच, सरकार के प्रयासों, जन जागरूकता, मूल्य आधारित शिक्षा आदि द्वारा क्रोध और असहिष्णुता नियंत्रित किया जा सकता है।

सही या उचित समझ बुद्ध की शिक्षा के महान अष्टांगिक मार्गों में से एक है। यह मन के उन गुणों को विकसित करना है जो किसी को चीजों की पूर्ण और यथार्थवादी समझ रखने में सक्षम बनाएगा, या जैसा कि बुद्ध कहते हैं, 'वस्तुओं का ज्ञान और दृष्टि जैसी वे वास्तव में हैं'।

कुछ दृष्टिकोण जो सही समझ के विकास में मदद कर सकते हैं उनमें दूसरों की राय पर भरोसा करने के बजाय किसी चीज़ का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का प्रयास करना, पूर्वकल्पित विचार न रखना, बिना सोचे-विचारे निष्कर्ष पर न पहुंचना, विभिन्न स्पष्टीकरणों के लिए खुला होना, निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए समय निकालना आदि शामिल है।

* 1. **(c) “If a country is to be corruption free and become a nation of beautiful minds, I strongly feel there are three key societal members who can make a difference. They are the father, the mother and the teacher.” – A. P. J. Abdul Kalam (150 Words, 10 Marks)**

**Tag:** Human Values – lessons from the lives and teachings of great leaders, reformers and administrators; role of family, society and educational institutions in inculcating values.

**Decoding the Question:**

* **In Introduction, define corruption and give data.**
* **In Body,**
* **Discuss the reasons for corruption in India.**
* **Discuss the role of parents and teachers.**
* **Conclude, with an opinion.**

**Answer:**

Corruption refers to the act of misuse and abuse of power especially by those in the government for personal gains either pecuniary or a favour. It is one of the most common ethical issues with which public servants are confronted.

As per the Corruption Perception Index (CPI) report published by the Transparency International (a civil society organization leading the fight against corruption), India ranked 81st among 180 countries and has dropped by two ranks from 79th slot in CPI 2016. New Zealand and Denmark were ranked as cleanest countries in 2017 CPI list. The CPI clearly depicts the prevailing level of corruption in the country.

The menace of corruption is pervasive in India, from petty bribes demanded by the policemen to multi-crore scams at the highest political level like 2G scam. It is not only limited to government authorities but can be seen within the private sector as well, for instance, the Satyam scandal.

**Reasons for corruption in India:**

* **Low Wages or Salaries:** The wages and salaries of public servants in India are very less, which indeed is not enough to take care of the children, parents or other dependents. This leads many public servants to involve themselves in corrupt practices.
* For example, a police constable in India merely gets a salary of Rs. 25,000 by giving 14 to 16 hours of duty a day. This amount may not be enough for him/her to live a quality life.
* **Crony Capitalism:** It has led to growth of unholy nexus between Politicians and businessmen. The recent amendment into RPA that allows the corporates to keep their donation secret further strengthens the veil of secrecy around such a nexus and leads to various corrupt practices.
* **Social and Ethical:** With the increasing shift towards individualization and materialism has led to increased penchant for a luxurious lifestyle. To earn more money people are willing to adopt even the unethical means with no consideration of others.
* **Criminalization of Politics:** More than 30% of the legislators in the country have pending criminal cases against them. When lawbreakers become lawmakers, the rule of law is the first casualty.
* **Colonial Bureaucracy and Failure in Reforms:** The bureaucracy essentially remains colonial in nature characterized by 19th century laws, e.g., Police Act 1861, complex rules, wide discretion, secrecy, moral responsibility devoid of legal accountability and the ivory tower attitude. Moreover, lack of political will and resistance from within the bureaucracy has led to failure of major reforms like citizen charter, RTI and e-governance.

The role of parents and teachers in ensuring that the citizens of a country grow up as - ethical, moral, law-abiding citizens with a strong knowledge base – cannot be overstated enough.

**Role of Parents:**

* Parents, especially the mother, are called a child’s first teachers. A child’s first lesson on right and wrong comes from his/her parents – when he/she is taught not to steal, never lie and not to intentionally harm others.
* Lessons learnt at this age are reinforced over the lifetime of an individual and form their basic character.
* For example, Gandhi through his close contact with his mother during childhood learnt and imbibed the moral values of truthfulness, non-violence through the stories of Ramayana and Mahabharata. These values instilled in Gandhi’s thoughts, feelings and actions as a child, functioned as ideals and standards that governed his actions in the course of Indian freedom struggle.

**Role of Teachers:**

* Teachers have a very important responsibility of laying the foundation of an individual’s future. They are the most important nation builders as they are not only responsible for the intellectual nourishment of young minds but also for moulding the overall personality of children.
* At young impressionable ages, teaching them about discipline, being responsible for their actions; inculcating values like team spirit, sharing, fair play, cooperation – a teacher sets the stage for a responsible citizen of the country.

Therefore, the nurturing done by parents and teachers determines the course of a nation – whether it will be made of upright, moral and argumentative Indians or dull-minds ready to compromise on their ethics.

**6(c) "मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मनों वाला बनाना है, तो उसमें समाज के तीन प्रमुख लोग अंतर ला सकते हैं। वे हैं पिता, माता और शिक्षक।” – ए. पी. जे. अब्दुल कलाम (150 शब्द, 10 अंक)**

**वाक्यांश:** मानवीय मूल्य - महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन और शिक्षाओं से सबक; मूल्यों को विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका।

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, भ्रष्टाचार को परिभाषित कीजिए और डेटा दीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **भारत में भ्रष्टाचार के कारणों की विवेचना कीजिए।**
* **माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका पर चर्चा कीजिए।**
* **एक राय के साथ निष्कर्ष निकालिए।**

**उत्तर:**

भ्रष्टाचार का अर्थ है सत्ता का दुरुपयोग और दुष्प्रयोग, विशेष रूप से सरकार में व्यक्तिगत लाभ के लिए जो या तो आर्थिक या किसी पक्ष लेना हो सकता है। यह सबसे आम नैतिक मुद्दों में से एक है जिनका लोक सेवकों का सामना करना पड़ता है।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल (भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व करने वाला एक नागरिक समाज संगठन) द्वारा प्रकाशित भ्रष्टाचार बोध सूचकांक (CPI) रिपोर्ट के अनुसार, भारत 180 देशों में 81 वें स्थान पर है और CPI 2016 में 79 वें स्थान से दो रैंक नीचे आ गया है। न्यूजीलैंड और डेनमार्क 2017 CPI सूची में सबसे स्वच्छ देशों के रूप में स्थान दिया गया था। CPI देश में भ्रष्टाचार के मौजूदा स्तर को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

भारत में भ्रष्टाचार का खतरा व्याप्त है, पुलिसकर्मियों द्वारा मांगी गई छोटी-छोटी रिश्वत से लेकर 2जी घोटाले जैसे उच्चतम राजनीतिक स्तर पर करोड़ों के घोटाले। यह केवल सरकारी अधिकारियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि निजी क्षेत्र में भी देखा जा सकता है, उदाहरण के लिए, सत्यम कांड।

**भारत में भ्रष्टाचार के कारण:**

* **कम तनख्वाह या वेतन:** भारत में लोक सेवकों की तनख्वाह या वेतन बहुत कम है, जो वास्तव में बच्चों, माता-पिता या अन्य आश्रितों की देखभाल के लिए पर्याप्त नहीं है। इससे कई सरकारी कर्मचारी स्वयं को भ्रष्ट आचरण में शामिल कर लेते हैं।
* उदाहरण के लिए, भारत में एक पुलिस कांस्टेबल को केवल 25000रु. का वेतन मिलता है। एक दिन में 14 से 16 घंटे की ड्यूटी देकर यह राशि उसके लिए एक गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है।
* **घोर पूंजीवाद:** इससे राजनेताओं और व्यापारियों के बीच अपवित्र गठजोड़ का विकास हुआ है। RPA में हालिया संशोधन जो कॉरपोरेट्स को अपने दान को गुप्त रखने की अनुमति देता है, इस तरह का गठजोड़ अनावश्यक गोपनीयता को और मजबूत करता है और विभिन्न भ्रष्ट प्रथाओं की ओर ले जाता है।
* **सामाजिक और नैतिक:** वैयक्तिकरण और भौतिकवाद की ओर बढ़ते हुए बदलाव के कारण विलासितापूर्ण जीवन शैली के प्रति रुझान बढ़ा है। अधिक पैसा कमाने के लिए लोग दूसरों की परवाह किए बिना अनैतिक तरीके भी अपनाने को तैयार हैं।
* **राजनीति का अपराधीकरण:** देश के 30% से अधिक विधायकों के खिलाफ आपराधिक मामले लंबित हैं। जब कानून तोड़ने वाले कानून निर्माता बन जाते हैं, तो कानून का शासन सबसे पहले होता है।
* **औपनिवेशिक नौकरशाही और सुधारों में विफलता:** नौकरशाही अनिवार्य रूप से 19वीं सदी के कानूनों की विशेषता वाली प्रकृति में औपनिवेशिक बनी हुई है, जैसे, पुलिस अधिनियम 1861, जटिल नियम, व्यापक विवेकाधीन शक्तियां, गोपनीयता, कानूनी जवाबदेही से रहित नैतिक जिम्मेदारी और असंवेदनशील रवैया। इसके अतिरिक्त राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव और नौकरशाही के अंदर ही प्रतिरोध, प्रमुख सुधारों जैसे नागरिक चार्टर, आरटीआई और ई-गवर्नेंस की विफलता के कारण हैं।

एक देश के नागरिक नैतिक, सदाचारी, एक मजबूत ज्ञान आधार के साथ कानून का पालन करने वाले हों -यह सुनिश्चित करने में माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका को पर्याप्त रूप से नहीं बताया जा सकता है।

**माता-पिता की भूमिका:**

* माता-पिता, विशेष रूप से माँ, बच्चे के पहले शिक्षक कहलाते हैं। एक बच्चे को सही और गलत का पहला पाठ उसके माता-पिता से मिलता है - जब उसे सिखाया जाता है कि चोरी न कीजिए, कभी असत्य न बोलें और जानबूझकर दूसरों को नुकसान न पहुंचाएं।
* इस उम्र में सीखे गए सबक व्यक्ति के जीवनकाल में मजबूत होते हैं और उनके मूल चरित्र का निर्माण करते हैं।
* उदाहरण के लिए, गांधीजी ने बचपन में अपनी मां के साथ अपने निकट संपर्क के माध्यम से रामायण और महाभारत की कहानियों के माध्यम से सच्चाई, अहिंसा के नैतिक मूल्यों को सीखा और आत्मसात किया। एक बच्चे के रूप में गांधीजी के विचारों, भावनाओं और कार्यों में स्थापित ये मूल्य, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उनके कार्यों को नियंत्रित करने वाले आदर्शों और मानकों के रूप में कार्य करते थे।

**शिक्षकों की भूमिका:**

* किसी व्यक्ति के भविष्य की नींव रखने की बहुत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी शिक्षकों की होती है। वे सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्र निर्माता हैं क्योंकि वे न केवल युवा मस्तिष्कों के बौद्धिक पोषण के लिए बल्कि बच्चों के समग्र व्यक्तित्व को ढालने के लिए भी जिम्मेदार हैं।
* युवा प्रभावशाली उम्र में, उन्हें अनुशासन के बारे में पढ़ाना, उनके कार्यों के लिए जिम्मेदार होना; टीम भावना, साझाकरण, निष्पक्ष खेल, सहयोग जैसे मूल्यों को विकसित करना - एक शिक्षक देश के एक जिम्मेदार नागरिक के लिए मंच तैयार करता है।

इसलिए, माता-पिता और शिक्षकों द्वारा किया गया पोषण एक राष्ट्र की प्रगति को निर्धारित करता है - चाहे वह ईमानदार, नैतिक और तर्कशील भारतीयों से बना हो या अपनी नैतिकता से समझौता करने के लिए तैयार मंद दिमाग से बना हो।